ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

डॉ0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम के''शैक्षिक''व''मूल्य'' सम्बन्धी विचारों की विद्यार्थियों,अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए प्रासंगिकता''

महेन्द्र कुमार तिवारी

शोध सारांश

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व यदि प्रभावशाली है तो वह समाज के लिए रोल मॉडल बन सकता है। उस व्यक्ति के कार्य समाज के लिए अनुकरणीय बन सकते है। उसके विचारों की समाज के लोगों के लिए प्रासंगिकता होती है, खासकर विद्यार्थियों व युवाओं के लिए। ऐसे ही महान व्यक्तित्व के धनी है–''हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति व वैज्ञानिक ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम''। कलाम मानवतावादी है। वे किसी वर्ग जाति या सम्प्रदाय से नहीं जुड़े। वे सभी संकीणताओं से उपर हैं। डॉ0 कलाम के व्यक्तित्व व विचारों की विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए प्रासंगिकता है। उनके विचारों को आत्मसात् कर विद्यार्थी एक अच्छा इंसान, बन सकता है। अभिभावक व शिक्षक भी उनके विचारों को आत्मसात् कर एक अच्छा नागरिक बन सकते है, व अपने पाल्य या विद्यार्थी को अच्छा नागरिक बना सकते है। डॉ0 कलाम का व्यक्तित्व समाज के लिए रोल मॉडल बन सकता है। विद्यालय को चाहिए कि ऐसे व्यक्तित्व का उपयोग वह पाठ्यक्रम व पाठ्यसहगामी क्रियाओं में कर अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करें। 45 विश्वविद्यालयों की मानद उपाधि से विभूषित डॉ0 कलाम का जीवन और उनके विचार किसी राह की तरह है, जिन पर चलते हुए उन्नत जीवन ही नहीं उन्नत राष्ट्र का निर्माण भी संभव है। वे कहते है कि कल सुन्दर हो इसके लिए आज का बलिदान जरूरी है।

प्रस्तावनाः–

डॉ0 कलाम **''पद्म विभूषण''** व **''पद्मभूषण सम्मान''** से सम्मानित है। 1992 में केन्द्रीय रक्षा मंत्री के**''वैज्ञानिक सलाहकार''** बने। 1997 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान **''भारत रत्न''** से सम्मानित किये गये। 2002 में भारत के **''राष्ट्रपति''**बनाये'' गये। सारी दुनिया उन्हें **''मिसाइल मेन''**के नाम से जानती है। 1980 में भारत का पहला उपग्रह प्रक्षेपण यान **''एसएलवी–3''** का श्री हरिकोटा से प्रक्षेपण किया। 1981 में उपग्रह प्रक्षेपण यान **''एसएलवी–3–डी''** का प्रक्षेपण किया। 1988 में **''पृथ्वी मिसाइल''** का दूसरा परीक्षण किया, 1989 में **''अग्नि मिसाइल''** का परीक्षण किया। 1998 में पोकरण, राजस्थान में सफल परमाणु परिक्षण किया। 1990 में जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा तथा 1991 में आईआईटी, मुम्बई द्वारा **''डॉक्टर ऑफ साइंस''** द्वारा सम्मानित किया गया। कलाम स्वयं एक अच्छे शिक्षक हैं। एक बच्चे ने जब उनसे पूछा कि आप फिर कब राष्ट्रपति बनेंगें, तब कलाम का जबाव था–''राष्ट्रपति बनने से पहले

एशोसिएट प्रोफेसर गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय,बोरावां जिला खरगोन (म0प्र0), prerana1212jain@gmail.com

मैं प्रोफेसर था। इसके बाद राष्ट्रपति बना। अब फिर से प्रोफेसर बना हूँ। अब बच्चों को पढ़ा रहा हूँ और एंजॉय कर रहा हूँ।

डॉ0 ए0 पी0जे0 अब्दुल कलाम के विचारः–डॉ0 कलाम ने कई क्षेत्रों पर अपने विचार व्यक्त किये, जिनमें से प्रमुख है –

(01)शिक्षा की परिभाषा :–ऐ.पी.जे. अब्दुल कलाम ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में'' शिक्षा'' को नये शब्दों में परिभाषित करते हुए कहा–''शिक्षा वास्तविक अर्थो में सत्य की खोज है। यह ज्ञान और प्रकाश की अंतहीन यात्रा है। ऐसी यात्रा मानवतावाद के विकास के लिए नये रास्ते खोलती है।''

(02)राष्ट्रपति का बच्चों को गुरूमन्त्र :–

विद्या देती नई कल्पना, कल्पना लाती नए विचार।

नए विचारों से मिले ज्ञान, ज्ञान बनाए आपको महान।।

(03)शिक्षा से ही सफलता की प्राप्तिः–जमकर पढ़ाई करो, रास्ते अपने आप खुल जाएँगें। पढ़े–लिखे बच्चे को संसार का कोई भी शैतान नहीं बिगाड़ सकता है। वे कहते है कल सुन्दर हो उसके लिए आज का बलिदान जरूरी है। अर्थात वर्तमान की पढ़ाई ही भविष्य को सुन्दर बनाती है।

(04)जीवन में एक अच्छा इन्सान बनेंः– जीवन एक मुश्किल खेल है। आप इसे जीत सकते हैं बेशर्त आप एक इंसान बनने के अपने जन्मजात अधिकार को संजोये रख सके। एक बच्चे ने जब उनसे पूछा कि–''एक राष्ट्रपति या अंतरिक्ष विज्ञानी, क्या कहलाना आपको अधिक पसन्द है? तो कलाम का जबाव था**–''मै अपने आपको देश के लिए काम करने वाला कहलाना पसन्द करूंगा''** वे कहते है–''मैं कुछ खूबियों के साथ पैदा हुआ हूँ, रेंगनें के लिए नहीं, उड़ने के लिए। ये खूबिया है–अच्छाई, विचार और सपने, महानता और पंख।''जब तक हम विश्व का सामना नहीं करेंगे, हमारा कोई सम्मान नहीं करेगा।

(05)सपने देखे, और उसे साकार करेंः– किसी भी सपने को साकार करने के लिए सपना देखना पड़ता है। महान स्वप्नदर्शी के महान स्वप्न हमेशा सर्वोत्कृष्ट होते है। कृन्रिम सुख नहीं ठोस उपलब्धियों की तलाश में रहिए। आकाश की तरफ देखिए, हम अकेले नहीं हैं। सारा ब्रह्मांड हमारे अनुकूल है। और जो सपने देखते हैं, वह उनके साथ उन्हें पूरा करने में जुट जाते है। बड़े सपने देखो, फिर उन्हें साकार करो। हमें ऐसे युवा चाहिए, जो सपने देख सकें, उन्हें पहले विचारों में फिर यथार्थ में बदल सके। जो लोग समर्पित होकर काम नहीं कर करते, उन्हें छिछला और आधा–अधुरा ही हाथ लगता है और उससे चारों और कटुता ही पनपती है।महज अनजाने भविष्य के लिए जीना छिछली बात है।

(06)सफलता प्राप्त करने का पैमाना कड़ी मेहनतः–सफलता का लुत्फ उठाने के लिए हर मनुष्य के लिए जरूरी है कि वह कठिनाइयों का अनुभव प्राप्त करें। सफलता के लिए चार स्टेप है– पहले लक्ष्य निर्धारित करें, उसके लिए लगातार ज्ञान प्राप्त करते रहे, कठिन मेहनत करें, तब तक जुटे रहें जब तक की मंजिल न मिल जाएँ। सफलता यों ही नहीं आती उसके लिए जरूरी है एकनिष्ठा। कठिनाइयाँ जीवन के लिए बहुत जरूरी हैं। सफलता का आनंद इसके बिना नहीं उठाया जा सकता।मै जिसे नहीं बदल सका उसे स्वीकारने के लिए तैयार रहा।

(07)पृथ्वी एक प्रेरणादायी ग्रहः– पृथ्वी सबसे शक्तिशाली व उर्जावान ग्रह है। पृथ्वी खुद अपनी धुरी पर घूमती है जिससे दिन और रात होते है और सूर्य के चारों और उसकी परिक्रमा पूरी होने से वर्ष बनता है। जब तक यह दोनों खगोलीय घटनाएँ होती रहेगी, तब तक हर घड़ी मेरे लिए शुभ है।

(08)समस्याओं का साहस से मुकावला करेंः–हमें समस्याओं से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए और न ही हमें परास्त करने की उन्हें अनुमति देनी चाहिए। जो चीज चुभती है, वे ही सिखाती है। लक्ष्य तय करो, कड़ी मेहनत करो और समस्याओं से साहस के साथ लड़ो। चोटी और चढ़ाई पर अर्थात शिखर पर चढ़ने के लिए शक्ति और संकल्प की जरूरत होती है, वह चाहे माउन्ट एवरेस्ट पर चढ़ने की बात हो या फिर अपने कैरियर या व्यवससाय को उँचाई पर ले जाने की।ऐसी शक्तियाँ होती है, जो आपके जीवन के पक्ष और विपक्ष में काम करती है। हर किसी को द्वेष पूर्ण शक्तियों में से लाभकारी शक्तियों का सही चयन करना चाहिए।

(09) ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास :– मैं इस मायने में हमेशा से एक धार्मिक मनुष्य रहा हूँ कि मेरा ईश्वर के साथ एक कामकाजी रिश्ता है। मुझे यह अहसास था कि सर्वोत्कृष्ट काम करने के लिए जितनी योग्यता होनी चाहिए, उतनी मुझमें नही है। इसलिए मुझे मदद की जरूरत थी, जो अल्लाह ही दे सकता था। मैंने अपनी योग्यता का वास्तविक आकलन किया और उसमें 50 प्रतिशत उपर से जोडा और फिर खुद को सौंप दिया खुदा के हाथों में। इस रिश्ते से मुझे हमेशा वह ताकत मिलती रही, जिसकी मुझे जरूरत थी। सच तो यह है कि मुझे हमेशा यह लगा कि वह शक्ति निरन्तर मुझमें प्रवाहित हो रही है। आज मैं पूरे विशवास के साथ कह सकता हूँ कि ईश्वर की सत्ता इसी शक्ति के रूप में हम सबके भीतर विराजमान है। यही हमें अपने लक्ष्यों की पूर्ति की और ले जाती है और यही हमारे सपने को सकार करती है।

(10) नेता की पहचान होती है उसके साथियों से :– कोई नेता कैसा है, कितना अच्छा है, इसकी पहचान होती है, प्रायोजना में उसके साथ सम्पूर्ण भागीदारी से काम करने वाले लोगों से और उनकी प्रतिबद्वता से। हमने हमेशा एक टीम के रूप में काम किया। जो सफलता मिली उसका श्रेय केवल मेरा नहीं, सबका हैं। अपने साथियों में मैंने ऐसे अनेक व्यक्ति देखे जिनमें नेतृत्व की क्षमता कूट–कूट कर

भरी थी। असल में ऐसे नेता हर स्तर पर मिल जाते हैं। प्रबंधन का यह एक और पहलू था, जो मैने सीखा।

(11) गुरू के प्रति अटूट श्रृद्वा :– डॉ0 कलाम की अपने गुरूओं के प्रति अटूट श्रृद्धा थी। वे आज भी अपने तीन शिक्षक को याद करते हैं। पहले शिक्षक थे– प्रोफेसर स्पीडर। इन्होंने कलाम को एयरोडाइनेमिक्स (वायुगतिकी) का पाठ पढ़ाया। दूसरेशिक्षक थे– डॉ0 कर्ट टैंक। तीसरे शिक्षक थे–प्रोफेसर के0ए0वी0 पण्डालाई। इन्होंने विमान का ढाँचा बनाने और जाँचने की हर बारिकी से कलाम को परिचित कराया।

(12) दूसरों से सीखना :–अमेरिका में जो बात कलाम ने सीखी उसे वे सुप्रसिद्व वैज्ञानिक बेंजमिन फ्रैंकलिन के इस वाक्य से व्यक्त करते हैं कि **''जो चीज चुभती हैं, वही सिखाती हैं।''**उन्होंने देखा किअमरिका के लोग समस्याओं से सीधे टकराते है और बर्दाश्त करते रहने के भारतीय स्वभाव के विपरीत, उनसे बाहर निकलने की कोशिश करते हैं।

(13) अध्यापक के लिए नॉलेज, रेडियेट व पारदर्शिता जरूरी :– अच्छे शिक्षक में इन तीन बातों का होना जरूरी है। साथ ही अच्छे शिक्षक के जीवन में शुद्धता होना जरूरी है। डॉ0 कलाम ने कहा कि हवाई जहाज के अविष्कार से पूर्व कहा जा रहा था कि कोई चीज उड़ नहीं सकती, लेकिन राइट ब्रदर्स ने इस धारणा को गलत साबित किया। उन्होंने यह कहा कि शिक्षकों में यह क्षमता होना जरूरी है कि वह बच्चों में रचनात्मकता एवं कल्पनाशीलता का पोषण करें। आज के युग में ऐसे शिक्षकों की जरूरत है, जिनमें नॉलेज, रेडियेट हो और उनका जीवन पवित्र व व पारदर्शी हो।

(14) ज्वलंत मुद्धा है भ्रष्टाचारः–डॉ0 कलाम का मानना है किभ्रष्टाचार घर से शुरू होता है। यदि बेटा–बेटी अपने माता–पिता को भ्रष्टाचार से रोकेंगे या उससे खरीदी चीजों का उपयोग नहीं करेंगे तो वह काफी हद तक समाप्त हो जायेगा। अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर मन वाला देश बनाना है तो समाज के तीन चरित्र इसे कर सकते हैं– माता, पिता और गुरू। भ्रष्टाचार को लेकर जीवन में पहली सीख मिली पिता से। पिता ने सिखाया कि किसी से गिफ्ट नहीं लेना, क्योंकि गिफ्ट देने वाला किसी कारण से आपको गिफ्ट देता है।

(15) **विद्यार्थी जिज्ञासा का हल ढुढ़ेः–**आप जो बनना चाहते है उस पर ढुढ़ता से कायम रहे। शिक्षकों से हर जिज्ञासा का समाधान हासिल करें, खुद पर आत्मविश्वास बनाये रखे। मैं सब कुछ कर सकता हूँ का भाव रखें। छोटा संकल्प लेना अपराध है, बड़ा संकल्प ले। सी0वी0 रमन का जिज्ञासु दिमाग था। उन्हें हर चीज आकर्षित करती थी। एक बार उन्होंने समुद्र और आकाश की और देखा तो दोनों नीले नजर आ रहे थे। यही साधारण सवाल उन्हें नोबल पुरूस्कार तक लेकर गया।

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

(16) कुछ भी असम्भव नहीं:–कुछ भी असंभव नहीं है। जो असंभव की बात करें उनके पास भी न जाएँ। इतना साहस हो कि खुद सफलता हासिल करें और दूसरों की कामयाबी पर खुश हों। हमेशा सोचे कि देश के लिए क्या कर सकते है,क्या दे सकते है। देश को देना सीखें। समस्याओं को ढुढ़ो और फिर उनको समाप्त करने के प्रयासों में जुट जाओ। कठिन परिश्रम करो और ज्ञान को अपडेट करते रहो। आज नैनो तकनीक का जमाना है। हमें इस बात में अन्तर करना होगा कि कल हमनें क्या काम किया था और आज हम क्या कर रहे है? मदर टेरेसा मानवता का श्रेष्ट उदहारण है।

(17) महिलाएँ बेखौफ होकर आगे बढ़े:– देश की हर महिला आत्मविश्वास के साथ बगैर डरे, सिर उँचा किए, अपने सिद्धातों पर चलते हुए आगे बढ़े। सुसंस्कारी हो और अज्ञानता दूर करें।

(18)सामाजिक कार्य करें:– शहर के 25–30 किलोमीटर आसपास जाएँ। समय मिले तो वहाँ के 05 अनपढ़ लोगों को पढ़ाने का जिम्मा ले। साथ ही सभी व्यक्ति 05 पौधे लगाएँ। शहर के लोग शाम को अस्पताल जाएँ और बेसहारों के लिए फल–फूल ले जाएँ, उनकी मदद करें।

(19) विद्यार्थी यूनिक बनें:– यदि आप यूनिक हो तो सब कुछ कर सकते हो, जरूरत है स्वयं को पहचानने की। नये साल के पहले दिन आपको तय करना है कि आप यूनिक किस तरह से बन सकते हो। एक यूनिक इन्सान के लिए कुछ भी असम्भव नहीं। यूनिक से तात्पर्य है कि–' सोचने वाला दिमाग, रचनात्मक दिमाग, लगातार सवाल की आदत के साथ ही चीजों को अलग नजरिए सक देखना। आविष्कार और खोज करने वालों का दिमाग यूनिक होता हैं। आप स्वयं से यह सवाल करें की आप यूनिक कैसे बन सकते हैं।

(20) विजन 2020 :–जो भी विद्यार्थी शिक्षा ले रहे है, उसमें ही महारथ हासिल करो तभी विजन 2020 पूरा होगा। लगातार ज्ञान लेने और कड़ी मेहनत से हर लक्ष्य पूरा हो सकता है। आप अपने आप से यह सवाल करे कि आप देश के लिए सबसे अच्छा क्या कर सकते है? इसके बाद देश के आर्थिक विकास में सभी वर्गों को जुटना होगा।

(21) चरित्र निर्माण की शिक्षा:–जहाँ दिलों में सच्चाई है, वहाँ चरित्र खूबसूरत है, वहाँ सद्भावना है। जहाँ सद्भावना है, उस देश में ही व्यवस्था है। जहाँ व्यवस्था है, वहाँ दुनिया में शांति है। ग्राहम वैल ने जब फोन का अविष्कार किया था उसके बाद वह रिचेस्ट पर्सन बन गया था, क्योंकि उनके चरित्र में खास बात थी। इसलिए चरित्र में सौन्दर्य होना चाहिए। धनवान बनने के बजाय चरित्रवान बनें, कुछ नया करेंगे, सपने पूरे करेंगं तो धन व सम्पदा तथा ख्याति खुद–बखुद पीछे आ जाएँगे।

(22) वैज्ञानिक क्षमता विकसित करें:– इग्नाइटेड माइंड ऑफ यूथ देश की सबसे बड़ी शक्ति है। बड़ा लक्ष्य, लगातार सीखने की ललक, सीखने के लिए अच्छी किताबें और अच्छे व्यक्ति, कड़ी महेनत और दृढ़ निश्चय से वैज्ञानिक क्षमता हासिल की जा सकती हैं। हम पर आई.आई.टी., पी.एम.टी. आदि परीक्षाओं का बोझ रहता है, इसलिए विज्ञान को समझकर एंजॉय नहीं कर पाते हैं। अल्बर्ट आइंस्टाइन ने नौ वर्ष की उम्र में पहला और 12 वर्ष की उम्र में दूसरा सिद्वांत दे दिया था।

(23) विज्ञान का साथ लें:– विज्ञान व्यक्ति की सोच और रचनात्मकता को निखारने का जरिया है। आम आदमी विकास के लिए जल प्रबंधन, भूमि प्रबंधन और पुनर्चक्रण पर ध्यान दें। इसके लिए विज्ञान की विभिन्न विधाओं को साथ लेना होगा।

(24) शिक्षक अपने विद्यार्थियों का लक्ष्य निर्धारित करें:–शिक्षक बचपन से ही अपने विद्यार्थियों का लक्ष्य निर्धारित करे। वे कहते है कि जब मैं दस साल का था तो मेरे शिक्षक सुब्रमण्यम अय्यर ने ब्लैक बोर्ड पर एक चित्र से समझाया कि एक पंक्षी कैसे उड़ता है। इसके बाद वे तट पर ले गये और उड़ते हुए पंक्षी को दिखाकर प्रायोगिक रूप से समझाया। एक साधारण से सिद्धांत ने मेरी जिन्दगी को एकलक्ष्य दे दिया। बस उसी के बाद मैं एरोनोटिकल और रॉकेट इंजीनियर बना।

(25)अपनी योग्यता के अनुरूप कैरियर चुने :– डॉ0 कलाम का मानना है कि अपनी योग्यता के अनुरूप कैरियर चुने। एक बच्चे ने जब उनसे कहा कि मैं बिजनेस मैन बनना चाहता हूँ तो उनका जबाव था–''यह अच्छी बात है तुम नौकरी माँगने वाले नहीं, देने वाले बनेंगे। उन्होनें केरल की एक लड़की जो कक्षा 10वीं में पढ़ती थी, उसका उदाहरण देते हुए कहा कि वह मनोविज्ञान पढ़ना चाहती थी, परिजनों के सपने अलग थे। मेरी परिजनों से बात हुई और उन्हें बच्ची की रूचि के बारे में समझाया। परिजन मान गये और अन्ततः वह लड़की मनोविज्ञान पढ़ रही है।

(26)विद्यार्थी आत्मविश्वास बनाये रखें व खुद पर भरोसा करें :–8वीं कक्षा के एक छात्र का उदाहरण देते हुए कलाम ने कहा कि एक छात्र आत्मविश्वास की कमी से अपनी समस्या अपने शिक्षक को नहीं बता पा रहा था, मैंने उसे खुद पर भरोसा करने के लिए समझाया और उसकी हिचकिचाहट दूर हो गई। इसलिएविद्यार्थी खुद पर भरोसा करे वआत्मविश्वास बनाये रखें। देश के युवाओं में आत्मविश्वास भरने की जरूरत है।आत्मविश्वास के बल पर युवा सब कुछ कर सकता है। इससे देश भी तरक्की करेगा और स्वयं युवाओं का भी भला होगा। आत्मनिर्भरता से ही आत्मसम्मान हासिल किया जा सकता है।

(27)देश प्रदूषण मुक्त हो:– देश को न्यूक्लियर एनर्जी की जरूरत है, जो प्रदूषण मुक्त हो। संसाधनों का अतिदोहन हो रहा है। यदि यही हालात रहे तो हमें धरती जैसे छह और ग्रहों की जरूरत होगी। ब्रिटेन में प्रति व्यकित के लिए 5 हेक्टेयर भूमि चाहिए, उत्तरी अमेरिका मे 6 हेक्टेयर और भारत में 1.6

हेक्टेयर। यदिउत्तरी अमेरिका की तरह रहने की ललक होगी तो हमें धरती जैसे छह ग्रहों की जरूरत होगी। पवन ऊर्जा व सौर ऊर्जा दोनों ऊर्जा के स्वच्छ माध्यम है, हमें अब ऊर्जा के इन माध्यमों पर कार्य करना होगा। बिजली चमकती हे, इससे भी ऊर्जा निकलती है, इस पर काम करना होगा। हम वाहनों के माध्यम से बड़ी मात्रा में कार्वन डाई आक्साइड आदि गैसे वातावरण में छोड़ रहे है इससे जलवायु परिवर्तन जैसे संकट आ रहे है। हमें पवन, सौर, थर्मल और न्यूक्लियर ऊर्जा का उत्पादन करना होगा।

(28) व्यक्तित्व में सुन्दरता जरूरी है :–आने वाली पीढ़ियाँ हमें इसलिए कतई याद नहीं करेंगी कि हमने कितने मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे और गिरिजाघर बनवाए, बल्कि वें हमें तभी याद रखेंगी, जब हम उन्हें स्वस्थ और खुशहाल भारत सौपेंगे। व्यक्तित्व में सुन्दरता जरूरी है।

(29)प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो:– मातृभाषा में ही बच्चों की प्राथमिक शिक्षा हो। जीवन में माता–पिता और प्राथमिक स्कूल के शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

(30)वेदों पर आधारित शोध की आवश्यकता:– देश के शैक्षिक, औद्यौगिक और कृषि विकास के लिए वेदों पर आधरित अध्ययन को आधुनिक शोध प्रक्रिया से जोड़ना और उन्हें प्रोत्साहित करना आवश्यक हो गया है। वैदिक काल की परम्पराओं का ज्ञान कृषि, चिकित्सा और अर्थशास्त्र आदि में बेहतर ज्ञान की प्राप्ति और सुधारों के लक्ष्य को पाने में मददगार होगी।

(31)भारत में विकसित देश बनने की क्षमता :– सौ करोड़ लोगों का हमारा राष्ट्र है, और हमेंकरोड़ों लोगों केराष्ट्र की तरह सोचना होगा, तभी हम बड़े हो सकते हैं।भारत को विकसित देश बनने लायक सभी क्षमताओं से परिपूर्ण है। भारत को विकसित राष्ट्र बनने के लिए एक जीवन दर्शन की आवश्यकता है। हमारे लिए एक अच्छा स्वप्न ही दर्शन हैं।

(32)अच्छा साहित्य पढ़ने की आदत डालें:– हमें पढ़ने की आदत डालना चाहिए, क्योंकि अच्छी किताबें सिर्फ शरीर को ही नहीं, बल्कि आत्मा को भी समृद्ध करती है।

निष्कर्ष :–

(1)डॉ0 अब्दुल कलाम के शैक्षिक व मूल्य संबन्धी विचारों की विद्यार्थियों, अभिभावकों व शिक्षकों के लिए प्रासंगिकता है।

(2) डॉ0 कलाम के विचारों व व्यक्तित्व को आत्मसात् करविद्यार्थी एक अच्छा इंसान, बन सकता है। अभिभावक व शिक्षक भी उनके विचारों को आत्मसात् कर एक अच्छे नागरिक बन सकते है, एवं अपने पाल्य या विद्यार्थी को अच्छा नागरिक बना सकते है। (3) डॉ0 कलाम का व्यक्तित्व समाज के लिए रोल मॉडल बन सकता है।

(4) डॉ0 कलाम के विचार प्रेरणादायी है। इन विचारों सेविद्यार्थियों को शिक्षा मिलती है।

(5)डॉ0 कलाम के विचारों में मूल्यों का समावेश है।

सुझाव :–

(1)डॉ0 कलाम के शैक्षिक व मूल्य संबन्धी विचारों को पाठयक्रम में शामिल किया जाये।

(2) शिक्षक स्वयं कलाम के विचारों को आत्मसात् कर पाठ्यसहगामी क्रिया के माध्यम से अपनेविद्यार्थियों को भी आत्मसात कराये।

(3) शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में कलाम के विचारों को शामिल किया जाये, ताकी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हो सके।

(4) अभिभवक स्वयं कलाम के विचारों को आत्मसात् करअपने पाल्यों को भी आत्मसात् कराये।

(5) शिक्षक व अभिभवक कलाम के विचारों से अपने विद्यार्थियों व पाल्यों को मूल्यों की शिक्षा दें।

(6) पुस्तकालय में कलाम संबंधित साहित्य रखा जाएँ, जिससेविद्यार्थीलाभान्वित होसकें।

(7) डॉ0 कलाम के शैक्षिक व मूल्य संबन्धी विचारों से ''विजन 2020'' को हासिल किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

(1)शर्मा, रमेशदत्त (2002, अगस्त). ''सर्वोच्च शिखर की ओर अग्रसर कलाम को सलाम'' • विज्ञान प्रगति, 51(8), 9–17 व 40–43.

(2) दैनिक भास्कर , जयपुर. 01 जनवरी 2012, पेज 23.

(3) दैनिक भास्कर , खंडवा. 02 फरवरी 2014, पेज 04.

(4) दैनिक भास्कर , इन्दौर. 26 मार्च 2012, पेज 01.

(5) राजस्थान पत्रिका ,जयपुर. 01 जनवरी 2012, पेज 01–02.

(6) राजएक्सप्रेस. 31 जुलाई 2011, पेज 06.

(7) लायन्स क्लब, मनावर (2004– 2005). ''ज्ञानोदय'' . वार्षिक पत्रिका, 3(1), पेज 08•.

(8)मिश्रा, सुनिता (2007). ''शिक्षक जवाबदेही''. इन सिंह, मयाशंकर, अध्यापक शिक्षा असमंजस में.नई दिल्लीः अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड
डिस्ट्रीब्यूटर्स.पेज.172.

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन विषय के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ का अध्ययन

डॉ. सुरेन्द्र कुमार तिवारी[1] अशोक कुमार नेगी[2]

शोध सारांश

स्कूल में गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराने की दृष्टि से प्रारंभिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन विषय के क्रियाकलापों पर आधारित अधिगम के विकास का लक्ष्य रखा गया है। वर्तमान में शिक्षा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम जिसमें एक महत्वपूर्ण बिन्दु स्कूल में गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराना भी शामिल है , वह भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। विद्यालयों में प्रारंभिक कक्षाओं से ही शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन की दृष्टि से विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन और विज्ञान विषयों का क्रियाकलापों पर आधारित अधिगम के विकास का अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान में प्राथमिक स्तर / माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पर्यावरण अध्ययन विषय सम्बन्धी सामान्य ज्ञान की समझ के विकास में आने वाली कठिनाई की वस्तुस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ का अध्ययन किया गया है।

भूमिका –

हमारे प्राथमिक विद्यालयों में पर्यावरण और विज्ञान विषयों की पढ़ाई के लिये विषय विशेषज्ञ अध्यापक नियुक्त नहीं हैं , प्रस्तुत शोध कार्य प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन विषय के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ का अध्ययन द्वारा वस्तुस्थिति की भूमिका को विद्यालयों में प्रभावी बनाया जा सकता है। यदि विद्यार्थी की पर्यावरण तथा विज्ञान विषय आधारित सामान्य ज्ञान की समझ को प्रारंभिक कक्षाओं में ही विकसित कर दिया गया तो भविष्य में इस पर आधारित सामान्य ज्ञान की उपयोगिता को प्रभावी बनाने में सहायक हो सकती हैं , इसे दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत क्रियात्मक अनुसंधान कार्य ***प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ का अध्ययन*** विषय का चयन किया है ।

शिक्षा के लोकव्यापीकरण हेतु सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन

प्राचार्य गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय,बोरावां जिला खरगोन (म0प्र0), shubh.shree28@gmail.com
व्याख्याता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान खण्डवा

की दृष्टि से राज्यशिक्षा केन्द्र द्वारा अनेक प्रभावी कदम उठाये गए हैं, प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण विषय के क्रियाकलापों पर आधारित अधिगम के विकास का लक्ष्य रखा गया है। वर्तमान में शिक्षा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम जिसमें एक महत्वपूर्ण बिन्दु स्कूल में गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराना भी शामिल है स्कूल में अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध कराने की दृष्टि से विगत वर्षों में खण्डवा जिले के विकासखण्ड की विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों की मॉनिटरिंग के दौरान कक्षाशिक्षण अवलोकन के दौरान यह पाया गया कि विद्यालय में प्रारंभिक कक्षाओं के अधिकांश विद्यार्थी पर्यावरण तथा विज्ञान विषय आधारित सामान्य ज्ञान की समझ सम्बन्धी प्रश्नों तथा सामान्य ज्ञान की समझ आधारित बातों के जवाब सक्रिय सहभागिता के साथ नहीं दे पा रहे हैं । अतः वर्तमान में ***प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन विषय के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ का अध्ययन*** अंतर्गत कक्षा 5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन विषय के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ के अधिगम विकास के लक्ष्य की वस्तुस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध का अध्ययन किया जाना आवश्यक है। यदि वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण विषय के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ का अध्ययन द्वारा वस्तुस्थिति की भूमिका को विद्यालयों में प्रभावी बनाया जावे तो भविष्य में इस पर आधारित सामान्य ज्ञान की उपयोगिता को प्रभावी बनाने में सहायता मिल सकती है , इस वस्तुस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध ***प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन विषय के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ का अध्ययन*** किया गया है।

अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व –

स्कूल में अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध कराने की दृष्टि से हो रहा है कार्यक्रम अंर्तगत कक्षा 5 के अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण विषय की दक्षता के विकास का लक्ष्य रखा गया है। सक्रिय सहभागिता के साथ सभी विद्यार्थियों को मिले । इसलिए महसूस किया गया कि प्रस्तुत शोध किया जाना आवश्यक है ताकि भविष्य मे इसकी उपयोगिता को प्रभावी बनाया जा सके।

विगत वर्षों में खण्डवा जिले के विकासखण्ड की विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों की मॉनिटरिंग के दौरान कक्षाशिक्षण में पर्यावरण *अध्ययन* विषय अध्यापन अवलोकन में यह पाया गया कि अधिकांश विद्यार्थी पर्यावरण अध्ययन विषय की अवधारणाओं को स्पष्ट नहीं कर पाते इसलिए महसूस किया गया कि वस्तुस्थिति की भूमिका को विद्यालयों में प्रभावी बनाया जा सकता है। यदि विद्यार्थी की पर्यावरण विषय की अवधारणाओं को प्रारंभिक कक्षाओं में ही स्पष्ट कर दिया जाय तो उसके दृष्टिकोण को वैज्ञानिक बनाने में सहायक हो सकती हैं, इसे दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अनुसंधान ***प्राथमिक विद्यालय***

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन विषय के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ का अध्ययन करने की आवश्यकता है ।

अनुसंधान के उद्देश्य –

प्रस्तुत क्रियात्मक अनुसंधान के लिए *उद्देश्य* निम्नानुसार है –

1 विद्यालय की कक्षा 5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर पर्यावरण अध्ययन विषय आधारित सामान्य ज्ञान की वस्तुस्थिति जानना ।

2 पर्यावरण अध्ययन विषय अध्यापन की पूर्व तैयारी , निर्देशित गतिविधियों एवं अभिलेख संधारण की स्थिति जानना ।

3 कक्षा 5 के विद्यार्थियों में पर्यावरण विषय के क्रियाकलापों पर आधारित अधिगम के विकास की स्थिति जानना ।

अनुसंधान परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत क्रियात्मक अनुसंधान के लिए *परिकल्पनाएँ* निम्नानुसार है –

1 विद्यालय की कक्षा 5 में पर्यावरण अध्ययन विषय का अध्यापन विधिवत होता है ।

2 विद्यालय की कक्षा 5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर पर्यावरण अध्ययन विषय आधारित सामान्य ज्ञान की समझ है।

3 विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों का संचालन टी एल एम की सहायता से करवाने पर विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान के उपलब्धि स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

सीमांकन–

प्रस्तुत अनुसंधान खण्डवा जिले के खालवा विकासखण्ड के शासकीय प्राथमिक विद्यालय जोगीबेड़ा जनशिक्षा केंद्र आशापुर के कक्षा 5वी में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए खण्डवा जिले के खालवा विकासखण्ड के शासकीय प्राथमिक विद्यालय जोगीबेड़ा जनशिक्षा केंद्र आशापुर के कक्षा 5वीं में दर्ज विद्यार्थियों का चयन किया गया।अनुसंधान हेतु कक्षा 5वीं में दर्ज 26 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

अनुसंधान के लिए तीन प्रकार के परीक्षण प्रपत्रों का निर्माण किया गया ।

1 पूर्व परीक्षण प्रपत्र – विद्यार्थियों के लिये

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

2 मध्यावधि परीक्षण प्रपत्र – विद्यार्थियों के लिये

3 पश्च परीक्षण प्रपत्र – विद्यार्थियों के लिये

विद्यार्थियों को *पर्यावरण अध्ययन विषय के क्रियाकलापों का* चित्र द्वारा परिचय गतिविधि कराने के लिये एवं अनुसंधान के लिए आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण कर प्रयोग,गतिविधि कराने हेतु निम्नानुसार तैयार की गई ।

1. मानचित्र 2.शब्द पॉसा 3.शब्द कार्ड 4.शब्द चित्र कार्ड 5. नामांकित शब्द चित्र चकरी 6. नामांकित शब्द चित्र पट्टी 6. विभिन्न विषयवस्तु पर आधारित सामग्री प्रयोग , गतिविधि हेतु

1 अक्टूबर माह विषयवस्तु पर आधारित पूर्व परीक्षण का आयोजन किया गया जिसके तहत एक दिन विद्यालय के कक्षा 5वीं में दर्ज सभी विद्यार्थियों का पूर्व परीक्षण प्रपत्र के माध्यम से परीक्षण किया गया।

2 पूर्व परीक्षण जॉच कार्य के बाद एक दिवसीय द्वितीय कार्यशाला/प्रशिक्षण के माध्यम से की विषयवस्तु पर आधारित उपचारात्मक शिक्षण किया गया। इसके लिये शोधार्थी द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान हेतु चयन किये गए विद्यालय के प्रधानअध्यापक तथा कार्यरत शिक्षकों को विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों क्रियाकलापों की जानकारी देकर विद्यालय में आवश्यक सामग्री , कक्ष बैठक व्यवस्था एवं विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों का संचालन प्रभारी अध्यापक द्वारा शिक्षण सामग्री की सहायता से कक्षा के सभी विद्यार्थियों की सहभागिता से करवाये गये तथा क्रियाकलापों का नियमित अवलोकन किया गया साथ ही साथ अभिलेख संधारण करवाया गया ।

3 नवम्बर माह के द्वितीय सप्ताह में की विषयवस्तु पर आधारित मध्यावधि परीक्षण प्रपत्र द्वारा परीक्षण किया गया एव परीक्षण जॉच कार्य के बाद एक दिवसीय तृतीय कार्यशाला/प्रशिक्षण के माध्यम से प्रसारण की विषयवस्तु पर आधारित उपचारात्मक शिक्षण किया गया जिसमें प्रशिक्षित शिक्षक द्वारा प्रतिदिन विद्यार्थियों का शिक्षण किया गया। विद्यालय में शिक्षण के दौरान विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों का संचालन अध्यापक द्वारा टी एल एम की सहायता से कक्षा के सभी विद्यार्थियों की सहभागिता से करवाया गया। चित्र एवं आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्री मानचित्र पॉसा, शब्द कार्ड, शब्द चित्र, शब्द चकरी, शब्द चित्र पट्टी के द्वारा विद्यार्थियों में आने वाली कठिनाई की पहचान कर निराकरण हेतु उचित तरीकों से अध्यापन , अभ्यास कार्य का प्रशिक्षण प्रदान किया गया । कठिन अवधारणा सुधारात्मक रोचक गतिविधियों का संचालन करवा कर अभिलेख संधारण करवाया गया ।

4. कार्यशाला/प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा प्रतिदिन विद्यार्थियों को आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्री द्वारा अभ्यास कार्य का आयोजन किया गया ।

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

आँकड़ों का संकलन एवं प्रस्तुतिकरण तथा परिकल्पनाओं का पुष्टिकरण

विद्यार्थियों के लिये तैयार परीक्षण प्रपत्रों– पूर्व , मध्यावधि एवं पश्च परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों के संकलन उपरांत प्रस्तुतिकरण ,परिकल्पनाओं का पुष्टिकरण परिणाम इस प्रकार हैं –

पूर्व एवं मध्यावधि परीक्षण

तालिका क्र. 1

परीक्षण	न्यादर्श का आकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	गणना से प्राप्त टी का मान
पूर्व	26	52.50	15.80	1.55
मध्यावधि	26	59.04	14.63	

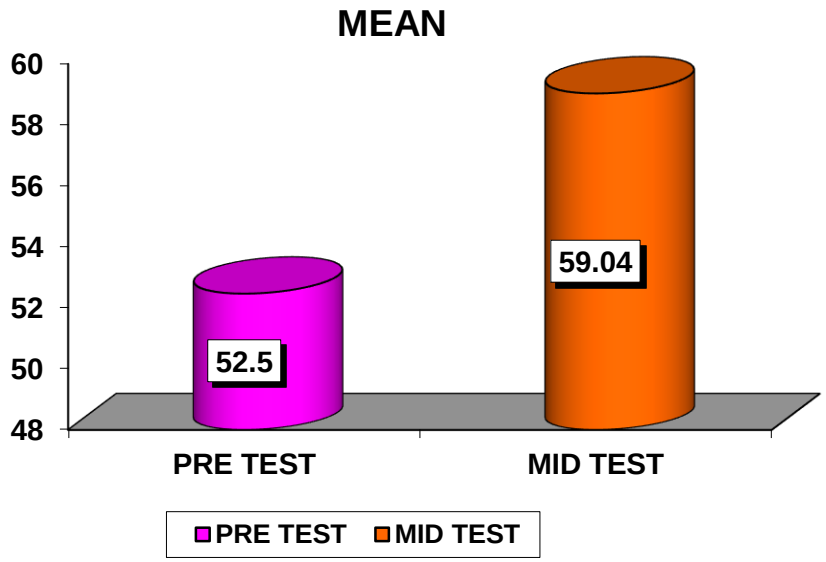

गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 1.55 है,

इसकी सार्थकता के लिये

टी का स्वतंत्रता अंश डी.एफ. = 50 है ।

टी तालिका में स्वतंत्रता अंश डी.एफ. = 50 पर

स्तर .05 मान 2.01 है ।

तथा स्तर .01 मान 2.68 है ।

गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 1.55 डी.एफ. = 50 पर टी तालिका के मान से कम है।

अतः हमारे द्वारा ली गई परिकल्पना–

"विद्यालय की कक्षा 5 में पर्यावरण अध्ययन विषय का अध्यापन विधिवत होता है ।" की पुष्टि होती है ।

" विद्यालय की कक्षा 5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर पर्यावरण अध्ययन विषय आधारित सामान्य ज्ञान की समझ है।" की पुष्टि होती है । अर्थात् विद्यालय में विषय का अध्यापन विधिवत होता है एवं कक्षा 5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर पर्यावरण अध्ययन विषय आधारित सामान्य ज्ञान की समझ है ।

मध्यावधि एवं पश्च परीक्षण

तालिका क्र. 2

परीक्षण	न्यादर्श का आकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	गणना से प्राप्त टी का मान
मध्यावधि	26	59.04	14.63	2.00
पश्च	26	66.92	13.79	

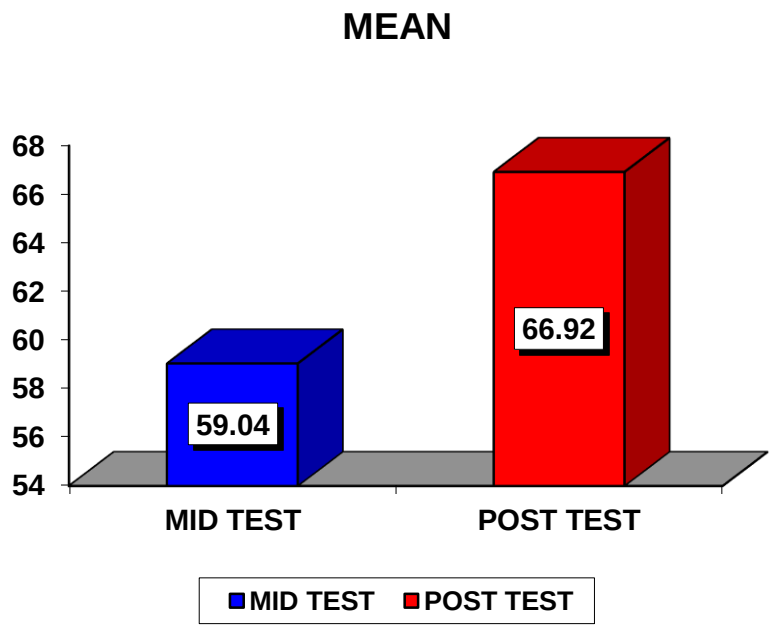

गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 2.00 है, इसकी सार्थकता के लिये टी का स्वतंत्रता अंश डी.एफ. = 50

है ।टी तालिका में स्वतंत्रता अंश डी.एफ. = 50 परस्तर .05 मान 2.01 है ।तथा स्तर .01 मान 2.68 है । गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 2ण्00 डी.एफ. = 50 पर टी तालिका के मान से कम है। अतः हमारे द्वारा ली गई परिकल्पनाएँ – "विद्यालय की कक्षा 5 में पर्यावरण अध्ययन विषय का अध्यापन विधिवत होता है ।" की पुष्टि होती है । विद्यालय की कक्षा 5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर पर्यावरण अध्ययन विषय आधारित सामान्य ज्ञान की समझ है।" की पुष्टि होती है ।

अर्थात् विद्यालय में विषय का अध्यापन विधिवत होता है एवं कक्षा 5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर पर्यावरण अध्ययन विषय आधारित सामान्य ज्ञान की समझ है ।

पूर्व एवं पश्च परीक्षण

तालिका क्र. 3

परीक्षण	न्यादर्श का आकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	गणना से प्राप्त टी का मान
पूर्व	26	52.50	15.83	3.51
पश्च	26	66.92	13.79	

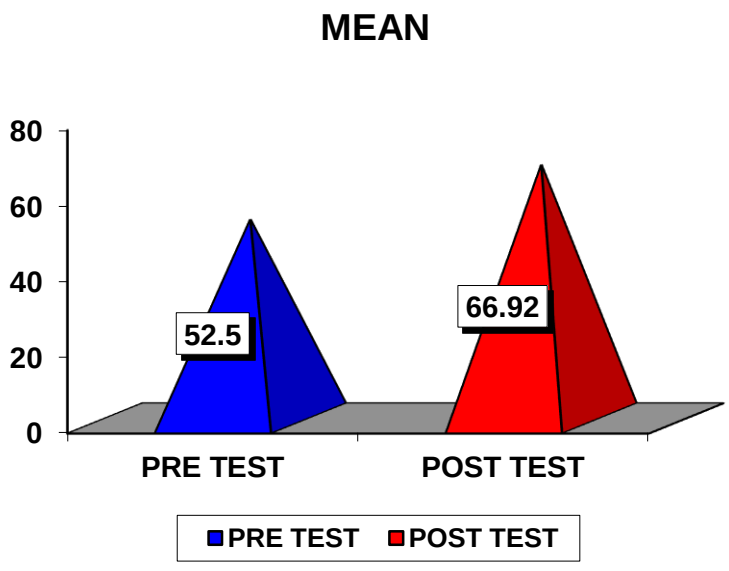

गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 3.51 है,
इसकी सार्थकता के लिये
टी का स्वतंत्रता अंश डी.एफ. = 50 है ।

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

टी तालिका में स्वतंत्रता अंश डी.एफ. = 50 पर

स्तर .05 मान 2.01 है ।

तथा स्तर .01 मान 2.68 है ।

गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 3.51 डी.एफ. = 50 पर टी तालिका के मान से अधिक है।

अतः हमारे द्वारा ली गई परिकल्पना –

" विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों का संचालन टी एल एम की सहायता से करवाने पर विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान के उपलब्धि स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।" निरस्त होती है ।

अर्थात् विद्यालय में विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों का संचालन सहायक शिक्षण सामग्री की सहायता से करवाने पर विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन के क्रियाकलापों पर आधारित सामान्य ज्ञान की समझ के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष अनुसार यह स्पष्ट होता है कि –

1 विद्यार्थियों में आने वाली कठिनाई की पहचान कर निराकरण हेतु उचित तरीकों से अध्यापन अभ्यास कार्य करवा कर शिक्षण प्रदान किया गया । रोचक गतिविधियों का संचालन करवा कर शिक्षण करवाने का सार्थक प्रभाव होता है । विद्यार्थियों के लिए रोचक गतिविधियों का संचालन शिक्षण को प्रभावी बनाता है,

2.विद्यालय में विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों का संचालन शिक्षण सामग्री की सहायता से कक्षा के सभी विद्यार्थियों की सहभागिता से करवाने पर एवं आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्री के प्रयोग तथा बार बार अभ्यास द्वारा उपचारात्मक शिक्षण करवाने के उपरांत विद्यार्थियों पर विषय के क्रियाकलापों पर आधारित अधिगम के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं ।

3. विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति के कारण अपेक्षित सुधार नहीं कर सकते हैं । अतः विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति में विषयवस्तु अनुसार सहायक शिक्षण सामग्री के प्रयोग एवं अभ्यास कार्य द्वारा गतिविधियों का संचालन शिक्षण को प्रभावी बनाता है एवं विद्यार्थियों के अधिगम के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं ।

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

सुझाव –

अध्यापकों के लिये –

क. यदि विद्यालय में अध्यापन के दौरान विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों का संचालन प्रभारी अध्यापक द्वारा प्रतिदिन विद्यार्थियों को आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्री द्वारा अभ्यास कार्य करा कर अध्यापन कराया जाए तो वे शीघ्रता से सीख सकते हैं ।

ख.यदि विद्यालय में अध्यापन पाठ्यवस्तु से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाए तथा गतिविधियों का संचालन आवश्यक सहायक शिक्षण सामग्री द्वारा अभ्यास कार्य करा कर अध्यापन कराया जाए तो पाठ्यवस्तु को शीघ्र सीख सकते हैं तथा विद्यार्थी तथा अध्यापक कार्यक्रम का पूर्ण लाभ सक्रिय सहभागिता के साथ उठा सकते हैं

विद्यार्थियों के लिये –

ग.यदि विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय में प्रसारण के दौरान विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों का संचालन कार्यक्रम प्रभारी अध्यापक के साथ किया जावे तो वे पाठ्यवस्तु सीख सकते हैं।

घ.यदि पर्यावरण विषय के क्रियाकलापों पर आधारित पाठ्यवस्तु के अभ्यास कार्य विद्यार्थियों द्वारा किये जाते हैं तो अध्ययन में आने वाली कठिनाई का निराकरण किया जा सकता है एवं अधिगम के विकास में सहायता मिलती है।

ड. सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति नियमित रहना चाहिए ।

विद्यालय प्रबंध समिति के लिये –

च. विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति के कारण शीघ्रता से पढ़ना सीखने मे अपेक्षित सुधार नहीं कर सकते हैं ।अतः विद्यालय प्रबंध समिति को इस दिशा मे सुधार कर सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने हेतु पालकों के सतत् सम्पर्क में रहना चाहिए ।

छ. विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति के साथ –साथ पालकों कों अपने पाल्य के द्वारा घर तथा परिवेश में वार्तालाप व पढ़ने के दौरान किये जाने वाले कार्य, गतिविधियों पर ध्यान देना चाहिए ।

ज. विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति में सहायक शिक्षण सामग्री के प्रयोग एवं अभ्यास कार्य द्वारा विद्यार्थियों में पर्यावरण विषय के क्रियाकलापों पर आधारित अधिगम के विकास पर ध्यान देना चाहिए ।

राज्य शिक्षा केन्द्र , भोपाल के लिये –

झ. पर्यावरण विषय के क्रियाकलापों की जानकारी हेतु सतत् प्रशिक्षित किया जावे ।

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

त. विद्यालय में अध्यापनकार्य निर्देशित टाइम टेबल अनुसार करवाया जावे तथा अध्यापन के दौरान विषयवस्तु अनुसार निर्देशित गतिविधियों का संचालन की नियमित मॉनिटरिंग , दल बनाकर की जावे तथा मॉनिटरिंग दल द्वारा दिये जाने वाले सुझाव को अमल में लिया जावे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा आर. ए. ,(2004).“शिक्षा अनुसंधान”.,मेरठः आर. लाल बुक डिपो .
- पर्यावरण कक्षा 5वीं.,(2011). भोपाल : मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र .
- पर्यावरण कक्षा 4वीं.,(2011). भोपाल : मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र.
- झिलमिल परस्पर रेडियो संवाद कार्यक्रम
- शिक्षक मार्गदर्शिका .,(2009). भोपाल : मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
- बैंगलोर : इज्यूकेशन डेवलपमेंट सेन्टर .

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

विकासगामी प्रवृत्ति के रूप में अधिगम की उपादेयता

धाराश्री श्रीवास

अधिगम अर्थात् सीखना एक निरन्तर प्रक्रिया के रूप में शिक्षाशास्त्री भलीभाँति जानते हैं। वर्डस्वर्थ [1] ने बहुत प्राचीन काल में अधिगम की परिभाषा में कहा था कि 'Learning is a process of development'- अर्थात् सीखना विकास की एक प्रक्रिया है। प्राणी मात्र से लेकर मनुष्य जाति भी निरन्तर कुछ न कुछ सीखता रहता है। इसी प्रक्रिया से जीव अपने जटिल कार्यों में भी सीखने की प्रवृत्ति के कारण बहुत कुछ ज्ञान अर्जित कर लेता है।

प्रारंभ में जिस बंदर ने अपने पैरों पर खड़े होना सीखा और आगे के दो पाँव हाथ के रूप में इस्तेमाल करना सीख लिया उससे बन्दर मनुष्य की श्रेणी में आ पहुँचा और इससे वह बंदर के बनिस्बत अधिक कुशल और कार्यक्षमं हुआ। संभवतः उसके डी.एन.ए. में भी इसी कारण विकास हुआ होगा। [2]

आज भी कई बंदर अपने रोजमर्रा के जीवन में कई कौशलों का प्रयोग करते हैं। प्रायः सभी जीव अपनी समस्याओं के प्रति अवगत होकर विकास की उन्नत प्रक्रिया अपनाते हैं।

जीवों में कुछ प्रक्रिया निसर्गदत्त है। उदाहरण के लिए पशु गाय, बैल, घोड़ा आदि केवल सूंघ कर खाद्य पदार्थों की पहचान करते हैं। वे कभी अखाद्य वनस्पति को नहीं खाते। यह उनकी नैसर्गिक प्रतिभा के बल पर है, इसी प्रकार की और भी अनेक प्रक्रियाएँ पशु नैसर्गिक दृष्टि से जान लेते हैं। आहार, निद्रा, भय और मैथुन जैसी चार नैसर्गिक प्रवृत्ति ही उनकी जन्मजात प्रवृत्ति है, जिसके लिए किसी से सीखने की जरूरत नहीं होती, किन्तु अन्य बातों के लिए जीव को अपनी–अपनी बुद्धि के बल से विकास की प्रक्रिया से जुड़ा होता है।

मनुष्य सबसे उन्नत प्राणी है, जिसको सीखने की प्रवृत्ति के कारण निरन्तर विकास करते–करते वह सर्वश्रेष्ठ प्राणी की हैसियत में खड़ा हुआ है।

नवीन ज्ञान और नवीन प्रक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया का नाम ही सीखना है, जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य स्थापित है। यही बात 'स्किनर' से बताई है। व्यक्ति अपनी आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों के कारण कुछ न कुछ नवीनतम बातों को सीखता रहता है, इससे ही उसके ज्ञान में निरन्तर अभिवृद्धि होती रहती है।

इसके सीखने की प्रवृत्ति जीवनभर चलती रहती है। इसी से वह नित्य–नूतन परिवर्तन को जानने लगता है। अनुभवों के संकलन को ही सीखना कहा जाता है। जो उद्देश्यपूर्ण होता है।

शोधार्थी, पेसिफिक युनिर्वशिटी shubh.shree28@gmail.com

विवेक से परिपूर्ण होता है। व्यक्ति स्वयं वैयक्तिक बातों को सीखता रहता है, लेकिन समूह के रूप में भी वह बहुत कुछ ज्ञान अर्जित करता है। इसी कारण सीखने की प्रक्रिया व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों है। अक्सर व्यक्ति अपने आसपास के परिवेश को देखता है, अनुभव करता है, जिससे उसके मन में कुछ वैचारिक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। विचारों की सक्रिया के कारण व्यक्ति के ज्ञान और अनुभव में नई–नई बातों का समावेश होता रहता है। सीखने को प्रभावित करने वाले कारकों में व्यक्ति ज्ञात और सरल चीजों से कठिन और अज्ञात को जानने का प्रयास करता है। जो भी व्यक्ति क्रमबद्ध तरीके से सीखता रहता है, उससे उसके अनुभवों में परिपक्वता उत्पन्न होती है और इसी से उसे नई–नई बातों को सीखने की प्रेरणा पैदा होती है। परस्पर व्यवहार, खेलकूद, मानसिक अवस्था आदि से सीखने की प्रवृत्ति का निरन्तर विकास होता रहता है। माता–पिता, गुरूजन, आपसी मित्र और व्यापक समाज इस सबके समवाय के कारण व्यक्ति का सीखना सुगम होता है।

सीखने की प्रभावशाली विधियों का शिक्षाशास्त्रियों ने काफी अध्ययन किया है, जिसमें प्रत्यक्ष रूप से अपने कार्यों में डूब जाता है और इसी से वह नई–नई चीजें सीखते रहता है। जैसे जेम्सवॉट ने भाप की शक्ति को जाना और उससे रेल इंजन का आविष्कार किया। गुरुत्वाकर्षण को जानकर व्यक्ति ने विराट खगोलीय ज्ञान प्राप्त किया। भारतीय वैज्ञानिकों ने शून्य का आविष्कार कर अंक पद्धति की लेखन शैली का विकास किया। भाषा का आविष्कार कर मनुष्य ने अपने विचारों को एक दूसरे तक पहुँचाया, इतना ही नहीं उसकी सूक्ष्म से सूक्ष्म और जटिलतम संवेदनाओं को जानने में सफलता प्राप्त की। लिपि के आविष्कार ने लेखन शैली का विकास और विस्तार किया। दुनिया में कई भाषाएँ विकसित हुई और इसके कारण एक दूसरे के विचारों और भावनाओं तक में पहुँच आसान और सरल हो गया है। ज्ञान के अपार विस्तार का अब आर–पार पहुँचना आसान हो गया है। मनुष्य के इन आविष्कारों के कारण मनुष्य का चिन्तन अधिक से अधिक व्यापक होता गया। 'थार्नडाइक' ने पिछली 50–60 वर्षों म पशुओं पर परीक्षण करके सीखने के नियमों का अनुसंधान किया है, जिसमें तत्परता और अभ्यास को महत्वपूर्ण सीखने का नियम बनाया है। इसके अनुसार तत्परता का अर्थ है विद्यार्थी सीखने के लिए हमेशा तैयार रहता है– सीखने के लिए जो भी परिस्थितियाँ आवश्यक होती हैं, विद्यार्थी उसके लिए आपके लिए सार्थकपूर्ण रूप से तैयार रहता है।

अभ्यास का अर्थ है किसी क्रिया को बार–बार करने से व्यक्ति–व्यक्ति कुशल और सिद्धहस्त हो जाता है, जिसमें उपयोग का नियम महत्वपूर्ण है। व्यक्ति किसी कार्य को लगातार करते रहता है, जिससे वह कुशल हो जाता है। जो व्यक्ति अभ्यास नहीं करता है वह भूल जाता है, जिससे उसका कौशल विस्मृत हो जाता है। अतः अभ्यास से व्यक्ति कार्यक्षम होता है। इसके लिए व्यक्ति की मनोवृत्ति जैसी है उसी के अनुसार वह कार्य करने में रूचि उत्पन्न करता है। व्यक्ति सीखने के दौरान अनेक त्रुटियाँ

करता है और फिर धीरे–धीरे उन भूलों का या त्रुटियों का परिमार्जन करके सही दिशा की ओर जाने लगता है। व्यक्ति जब नया ज्ञान प्राप्त करने की ओर प्रवृत्त होता है, तब वह बहुत सी बातों को आत्मसात करता है। व्यक्ति बहुत सी बात पूर्व में की गई बातों का अनुसरण करता है और फिर अनुकरण को वह साक्षात् विधि द्वारा अनुकरण करता है, इससे सीखने की प्रक्रिया वह अपनाने लगता है और कुशलता प्राप्त करता है।

सीखने की प्रक्रिया में 'ध्यान' सबसे महत्वपूर्ण कारक है।[3] अध्यापक जब कक्षा में पढ़ाते है, तब सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अध्यापक द्वारा कहीं गई बात ध्यानपूर्वक सुनना ताकि वे पूरी तरह से सीखी हुई बातों को भलीभाँति समझ ले। यदि पढ़ाते समय विद्यार्थी के मन में सीखे हुए पाठ के अतिरिक्त अन्य बातों पर ध्यान केन्द्रित हो तो सीखा हुआ ज्ञान उसके ऊपर से गुजर जायेगा और वह जो सीख रहा है उस तरफ जरा भी ध्यान नहीं होगा।

प्राचीन समय में राजा जनक के कार्यकाल में एक ऋषि ने कहा था कि 'राजा जनक ! आप सारे ऐश्वर्य भोग रहे है, तब भी वह 'विदेह' कहे जाते हैं। ऐसा कैसे हो सकता है ? राजा जनक ने एक तरकीब की। भरे दरबार में ऋषि को बिठा दिया उनके सिर पर घोड़े के बाल से एक नंगी तलवार टांग दी। राजा ने सुन्दर नृत्यांगना का नृत्य प्रारंभ किया। बहुत देर तक पूरी सभा नृत्य का कार्यक्रम देखती रही। ऋषि भी नृत्य देखते रहे। नृत्य समाप्त होने पर ऋषि ने राजा से कहा कि 'ऋषिवर् सुन्दर और मनमोहक नृत्य देखकर आपको अच्छा लगा होगा ? तब ऋषि ने कहा राजन् ! मैंने नृत्य में कभी भी ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मेरे सिर पर घोड़े के बाल से बंधी नंगी तलवार का ध्यान ही प्रतिक्षण लगा रहा, इसलिए नृत्य में कोई भी आनंद नहीं मिला। इसी क्षण ऋषियों से राजा जनक ने 'विदेह' का अर्थ समझ लिया।

सीखने के दौरान पढ़ने में अत्यंत सावधान रहना चाहिए और ध्यानपूर्वक अध्यापक की ओर लक्ष्य देना चाहिए। अधिगम अर्थात् सीखने को प्रभावित करने में स्मरण का विशेष योगदान होता है। स्मरण करने में सहज ही पुनरावृत्ति होती है। सीखी हुई वस्तु का सीधा उपयोग है। सीखने की प्रक्रिया और स्मृति एक दूसरे के पूरक है। अच्छी स्मृति सीखने को तत्काल प्रभावित करती है। इसलिए स्मृति को विकसित करना जरूरी होता है। स्मृति की प्रबलता के कारण सीखी हुई वस्तु तुरन्त समझने योग्य बनती है। स्मृति को विकसित करने के लिए स्पष्ट ज्ञान, प्रोत्साहन, रुचि उत्पन्न होना, पूर्ण ज्ञान, दोहरना, एकाग्रता आदि सरल विधियों को अपनाकर सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

सीखने से अर्थात् अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए अभिप्रेरणा महत्वपूर्ण है।[4] प्रेरणा एक प्रक्रिया है, जिसमें सीखने वाले की आंतरिक शक्तियाँ या आवश्यकताएँ उसके वातावरण में विभिन्न लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती हैं। अभिप्रेरणा के दो प्रकार माने जाते है। सकारात्मक और नकारात्मक। सकारात्मक अभिप्रेरणा के द्वारा बाल व्यवहार में अनुकूल परिवर्तन उत्पन्न किया जाता है। चरित्र निर्माण के सकारात्मक प्रेरणा अधिक लाभदायक है। सीखने के दौरान ध्यान केन्द्रित करने में सकारात्मक सहयोग प्रदान किया जाता है। मानसिक रुचि में विकास उत्पन्न होता है। अनुशासन के साथ अन्य सामाजिक गुणों का भी विकास उत्पन्न किया जाता है और पर्याय से अधिक ज्ञान का अर्जन भी किया जा सकता है।

सीखने के प्रभावशाली उपायों के अन्तर्गत छात्र को सीखने की इच्छा होनी चाहिए, तभी वह विषयवस्तु की ओर आकर्षित रह सकता है। छात्र को सशक्त अभिप्रेरणा की आवश्यकता होती है। प्रोत्साहन परक प्रवृत्ति है। अशक्त अभिप्रेरणा के कारण छात्र विषय की ओर अधिक अधिक जानने के लिए उत्सुक रहेगा और वह अपनी भूमिका में कभी मन विचलित नहीं रह सकेगा। सीखने के प्रभावशाली उपायों के रुप में प्रत्यक्ष क्रियात्मक विधि का प्रयोग करना, रुचिकर अभिवृत्ति का होना, विषय वस्तु की ओर भावात्मक लगाव होना, परिवेश के प्रति सजग रहना और परिवेश में रुचि पैदा करना आदि कारणों से सीखना अधिक प्रभावशाली उपक्रम बन जाता है। छात्र को यदि आन्तरिक और बाह्यरुप से किसी प्रकार की प्रेरणा नहीं होगी, तो छात्र विषयवस्तु की ओर कभी भी आकर्षित नहीं रह सकेगा। सीखने के लिए जिस प्रकार के अनुकूल वातावरण की आवश्यकता है, यदि वह वातावरण छात्र के अनुकूल न हो छात्र की मनःस्थिति निरुत्साह से परिपूर्ण हो जायेगी। छात्र का उद्देश्य सीखने की ओर अधिक होना चाहिए, क्योंकि सीखने की प्रक्रिया ही ज्ञानार्जन की केन्द्र वस्तु है। शिक्षक का भी यह दायित्व है कि विद्यार्थी अपनी सीखने की प्रवृत्ति को अधिक से अधिक रुचिकर बनाने का प्रयास करे।

संदर्भ

1. वर्डस्वर्थ की परिभाषा, शिक्षा मनोविज्ञान, पृ. 281.
2. गेट्स और अन्य, सीखने की विशेषताएं, पृ. 299.
3. स्टीफेन्स, अभिप्रेरणा, पृ. 350–351.
4. थार्नडाइट, सीखने के सिद्धांत, एज्यूकेशनल फिलासॉफी, सन् 1913.

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

चरित्र की अवधारणा

अनूप कुमार कुरील

शोध सारांश

चरित्र की अवधारणा की दृष्टि से विद्वानों में मतभेद है। प्रत्येक जीवन पद्धति की अपनी–अपनी निर्धारित शैली है, जो अनेक बातों पर निर्भर है। विशिष्ट समूह के द्वारा निर्धारित किये गये आचरणों पर चरित्र की अवधारणा आधारित है। केवल इतनी ही बात नहीं है। आचरण की धारणा और समय–समय पर बदलती रहती है। वह सार्वकालिक और सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकती, इसलिए समय के परिवर्तन के आधार पर आचरण के नियम भी निर्धारित होते है।

इसी कारण सेमुअल स्माइल ने चरित्र की परिभाषा में कहा है कि 'चरित्र, आदतों का पुंज है।'[1] जो परम्परा से प्रचलित आदत है उसी का सामूहिक पूंज चरित्र है। चरित्र के शाब्दिक अर्थ के रूप में व्यवहार, आदत, चाल चलन, अभ्यास, कृत्य, कर्म इसके अर्थ है।[2]

चरित्र में, विशेष रूप से बालकों के चरित्र में संकल्प शक्ति निहित होती है।

अंग्रेजी के शिक्षा मनोविज्ञान के पुस्तक में 'चरित्र, आत्मनियंत्रण की शक्ति है।'[3] चरित्र, पूर्णतया प्रशिक्षित इच्छा शक्ति है।[4] अन्त में उमबिल लिखता है कि– चरित्र इन सब प्रवृत्तियों का योग है, जो एक व्यक्ति में होती है।[5] इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कोई भी चरित्र के अर्थ की पूर्ण व्याख्या नहीं करती है।

अतः चरित्र एक परिपूर्ण और स्थायी परिभाषा नहीं की जा सकती। यह एक गतिशील धारणा है। यह व्यक्ति के दृष्टिकोण पर निर्भर है। चरित्र वस्तुतः अर्जित प्रवृत्तियों का पूर्ण योग है।

अच्छे चरित्र के लक्षण

बाउले और अन्य चिन्तकों ने अच्छे चरित्र की परिकल्पना की है। उसमें आत्मनियंत्रण, अविश्वसनीयता, कार्य में दृढ़ता, अन्तःकरण की शुद्धता और उत्तरदायित्व की भावना अच्छे चरित्र के रूप में की गई है।

व्यक्ति को अपने विचारों, व्यवहारों, इच्छाओं और भावनाओं पर अधिकार होना चाहिए। व्यक्ति की परिस्थिति, प्रसंग आदि का सर्वांगीण विचार करने ही उसे अपने व्यवहार को निर्धारित करना चाहिए।

आमतौर पर सभी के प्रति सहज विश्वास रखना चाहिए। हमेशा व्यक्ति को सन्देहास्पद मानना उचित नहीं होता और न ही हमेशा सकारात्मक विचार यदि है, तो उसे जबरन नकारात्मक दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए। क्षणिक विचार या सनक के आधार पर व्यक्ति का निर्धारण नहीं किया जाना चाहिए।

अक्सर यदि विचार सही है, और किसी के प्रति हानिकारक नहीं है, तो उसे अपने विचारों पर

प्राचार्य, दाताहरी पब्लिक (हा.सेकेण्डरी), स्कूल,कुक्षी, जिला धार (म.प्र.), prince9893752247@gmail.com

दृढ़ रहना चाहिए। व्यक्ति को अपने सही कर्मों के प्रति निष्ठावान् रहना चाहिए। अच्छे चरित्र का व्यक्ति कर्म, वचन और व्यवहार में छल–कपट की आवश्यकता नहीं होती। अतः करण की शुद्धता स्वयं के लिए और अपने परिवेश के संदर्भ में ही लाभप्रद होती है। मनोविश्लेषणों ने अच्छे चरित्र के निर्माण के कारण निम्नानुसार माने है–

चरित्र निर्माण में मूल प्रवृत्तियाँ महत्वपूर्ण है। उसी के कारण व्यक्ति पद, शक्ति, समाज प्राप्ति के लिए संघर्ष करता है। स्थायी गुण के रूप में मूल प्रवृत्तियों के साथ संवेगों का घनिष्ठ संबंध है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आदतों के अनुसार व्यवहार करता है। यदि व्यक्ति में अच्छी आदते हो तो वह उत्तम चरित्र का माना जाता है। अच्छी आदतों के लिए सत्संगति का बड़ा महत्व है। यदि व्यक्ति अच्छे सदाचारी व्यक्ति के सम्पर्क में रहेगा तो उसमें भी अच्छे गुणों का प्रवेश होगा। कर्ण एक महान धनुर्धारी था। बहुत से अच्छे गुण उसमें थे, किन्तु दुर्योधन के सानिध्य के कारण कर्ण में कुछ चारित्रिक दोष पैदा हो गये जो उसके विनाश का कारण बने।

चरित्र के निर्माण में स्थायी भाव–का महत्व है। व्यक्ति का मत अच्छी भावनाओं से युक्त होना चाहिए। उदाहरण के लिए उसमें परोपकार की भावना होनी चाहिए। वह संकट के समय अपने मित्र की मदद करें। दूसरों के प्रति उसके मन में सहानुभूति का भाव हो। व्यक्ति को कभी भी आत्म सम्मान का ध्यान रखना चाहिए। व्यक्ति को यदि अपने प्रति सम्मान का भाव हो, तो व्यक्ति कभी भी मन, वचन और क्रिया के द्वारा अशोभनीय बात की चर्चा नहीं करेगा।

चरित्र निर्माण करने वाले कारक के अन्तर्गत 'इच्छा शक्ति' होती है, वही अपने निर्णयों पर स्थिर रहता है, अपने विचारों पर उसका अधिकार होता है। इस कारण इच्छा शक्ति नकारात्मक नहीं होनी चाहिए। इसी प्रकार किसी भी प्रकार से इच्छाशक्ति विकार युक्त नहीं होनी चाहिए।

सब से अधिक प्रभावित करने वाली विशेषता वंशानुक्रम है। व्यक्ति में मूलतः जन्मजात कुछ न कुछ विशेषता हो जरूरी है। एक साथ जुड़वा बच्चों में भी देखा गया है कि एक बालक जन्म जात बुद्धिमान है, जबकि उसका सहजात जुड़वा भाई कम बुद्धिमान है, इसलिए व्यक्ति के जन्मजात गुणों से भी उसके चरित्र का निर्माण होता है।

बालक जब वयस्क होने की अवस्था में होता है, तब उसके लिए आस पास परिवेश भी अनुकूल होना चाहिए। व्यक्ति के आस पास का सामाजिक वातावरण बालक के मन के अनुकूल होना चाहिए। इस बालक के आस पास के लोक स्वस्थ मनोवृत्ति के और सकारात्मक विचारधाराओं वाले होने चाहिए। विद्यालय में पढ़ने वाले सहपाठी अच्छे विचारों के होने चाहिए। सामाजिक रहन–सहन, रीति–रिवाज ऐसे होने चाहिए कि बालक पर उसका सकारात्मक प्रभाव होना चाहिए। जिस वातावरण में बच्चे के विकास की प्रक्रिया जारी रहती है, उस पर अपने परिवेश के अनुकूल प्रभाव के कारण ही बच्चा सही विचारवाला बनता है।

अन्त में व्यक्ति की मानसिक शक्ति अच्छी होनी चाहिए। व्यक्ति के स्वभाव पर भी चरित्र निर्माण निर्भर है। धीर, गंभीर और शांत संयत स्वभाव वाला व्यक्ति कठिन से कठिन स्थिति में बिना विचलित

हुए सही मार्ग का निर्धारण करने में सक्षम होता है। इसलिए रॉस (Ross) ने कहा है कि 'स्वभाव की जन्मजात विभिन्नताएँ, वे ईंटे है, जिनके द्वारा चरित्र का निर्माण किया जाता है।'[6]

चरित्र निर्माण की दिशा में उचित शिक्षा का कार्य महत्वपूर्ण होता है। बालक को नियमित पढ़ाया जाना चाहिए। योग्य शिक्षक इसके लिए जिम्मेदार होते है। बचपन में शिक्षक ने यदि शिक्षा देने के कार्य में परिश्रम, धैर्य, सहानुभूति आदि बातों की ओर ध्यान नहीं दिया तो बच्चा अध्ययन में कमजोर हो जाता है। प्रारंभिक कक्षाओं में उदाहरण के लिए शिक्षक ने गणिक की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। संभवतः वे स्वयं गणित में कमजोर रहे होंगे– परिणामतः उनके अधीन शिक्षकों के प्रभाव से बहुत से विद्यार्थी 'गणित' में कमजोर रह गये और वे आगे चलकर भी गणित में निष्णात नहीं हो सके।

एक कुशल अध्यापक वह है जो बालक के अन्दर झाँक सकता है और उसको अपने आप में ऐसे आदर्श की अनुभूति करा सकता है, जो उसके अन्दर से विकसित हुआ हो तथा जिससे जीवन में प्रेरणा ग्रहण करके वह एक उत्तम मानव बन सके। अध्यापक को चाहिए कि वह बालकों को जीवन का अर्थ समझाए। जीवन के रहस्यों को जानने योग्य शिक्षक को होना चाहिए, जिससे वह बातचीत के द्वारा और दूसरी विधियों को अपना कर बालकों के अच्छे और बूरे प्रकार के जीवन की ओर उचित दृ ष्टिकोण अपनाने में सहयोग दे सके।

इसलिए अध्यापक को अपने पाठ्यक्रम से भली भाँति परिचित होना चाहिए। हॉर्न महोदय ने पाठ्यक्रम के संबंध में कहा है कि– 'पाठ्यक्रम एक अनुभवों का बण्डल है, जिनमें एक व्यक्ति की अभिरुचि, योग्यताओं तथा आवश्यकताओं का समुचित ध्यान रखना जाता है।' इसलिए पाठ्यक्रम उद्देश्यों से प्रेरित होना चाहिए।[7]

कुछ शिक्षाशास्त्री मानते है कि बालक को भविष्य के लिए कुशल बनाना शिक्षा का कार्य है। बालक किशोरावस्था में जिस मनोरम और काल्पनिक संसार में रहता है। उससे आगे बढ़ाकर उन्हें यथार्थ और कटु भूमि पर लाने का कार्य शिक्षा करती है। बालक को प्रौढ़ जीवन के उत्तरदायित्वों और विशेष अधिकारों को निभाने योग्य बनाना शिक्षा का आवश्यक कृत्य है।

शिक्षा के माध्यम से बालक में सामाजिक भावना को जगाना भी शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है, ताकि बालक के मन में सामाजिक रूप से उत्पन्न किया जा सके, समाज के आदर्शों, नियमों, परिपाटियों, आशाओं, विचारों व भावों को स्थायी बना कर जीवित रखा जा सके। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपनी संस्कृति और उसकी सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा करना भी सीखता है। उसके साथ ही केवल सांस्कृतिक परम्पराओं का अनुरक्षण ही आवश्यक नहीं है, अपितु उसम संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन भी आवश्यक होता है, क्योंकि कोई भी परम्परा सार्वकालिक नहीं होतीं। उसमें परिवर्तन आवश्यक है। प्राचीनकाल में वैदिक देवताओं का अति महत्व था। बाद में विभिन्न अवतारों की परिकल्पना की गई। सगुण भक्ति के साथ निर्गुण भक्ति की अवधारणा प्रकट हुई।

इस प्रकार व्यक्ति में परिवर्तन होना स्वाभाविक प्रक्रिया है। कुल मिलाकर बालक के व्यक्तित्व का आदर किया जाना चाहिए। साथ ही छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी उत्पन्न करना जरूरी है। अन्यथा बालक के विकास में कमियाँ उत्पन्न हो सकती है। छात्र का दृष्टिकोण सर्वांगीण होना जरूरी है।

विद्यालय में चरित्र निर्माण के लिए निम्नांकित योगदान की आवश्यकता होती है–

बालकों में अच्छे विचार और सदिच्छाओं को जागृत करना, नैतिक गुणों का विकास करना, बालकों में प्रेम, दया, सहानुभूति जैसी मानवीय संवेदनाओं को जगाना, भय, घृणा, क्रोध जैसी नकारात्मक भावनाओं को छात्रों से दूर रखना, सामाजिक क्रियाओं में सहयोग देना तथा उच्च आदर्शों और सिद्धान्तों की प्रेरणा देना और महान व्यक्तित्वों से अवगत करना, जैसी प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाना चाहिए।

इसी प्रकार सामुदायिक चरित्र का विकास करना जिसमें राष्ट्रीय हित में चरित्रों को विकास आवश्यक है।

बालकों की शिक्षा में समुदाय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। चरित्र विकास की दृष्टि में माता–पिता का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण होता है, इस पर भी बालक के चरित्र का निर्माण किया जाता है, इसलिए बालक के मन में अपने बच्चों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार करना आवश्यक है। माता–पिता को सच्चे सुहृदय और सखा की दृष्टि से व्यवहार करना चाहिए। हमेशा माता–पिता के प्रति ईमानदारी का जीवन व्यतीत करना चाहिए। इस प्रकार बालकों के चरित्र को जन्मजात कारक, वातावरण संबंधी दशाओं और सामाजिक चरित्र का एकजाई परिणाम होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. वामन शिवराम आपटे– संस्कृत हिन्दी कोश– पृ. 374.

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

''क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,अजमेर में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन''

दीपक कूमार यादव

शोध सारांश

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व अभूतपूर्व हिंसा से ग्रसित है। हम शांति शिक्षा को चाहते तो है परन्तु उसको आत्मसात नहीं कर पा रहे है। शांति शिक्षा हमारे समाज में उस संस्कृति का निर्माण करती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति भय और हिंसा से मुक्त होकर अपनी क्षमताओं का भरपूर विकास कर सकतें हैं। शोध का उद्देश्य क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान, अजमेर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शांति शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। शोध न्यादर्श में क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान, अजमेर में ***B.Ed*** *तथा* ***B.Sc.B.Ed*** *पाठयक्रम में अध्ययनरत 60 विद्यार्थियों को लिया गया है। परिणाम के रूप में पाया गया कि छात्रों तथा छात्राओं में शांति शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।* ***B.Ed*** *तथा* ***B.Sc.B.Ed*** *के विद्यार्थियों में शांति शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है। अतः कहा जा सकता है कि* ***B.Sc.B.Ed*** *पाठयक्रम में शान्ति शिक्षा पर अधिक ध्यान देना चाहिए ताकि से प्रशिक्षणार्थी विद्यालयों में जाकर शान्ति शिक्षा को प्रसारित कर सकें।*

1. प्रस्तावना :–

हम स्थानीय, राष्ट्रीय और भूमंडलीय स्तर पर अभूतपूर्व हिंसा के युग में जी रहे है। यह एक गंभीर चिन्तनीय विषय है कि विद्यालयों को शांति स्थापित करने की पौधशाला बनाने कि जगह उन्हें हिंसा भडकाने फैलाने के केन्द्रों के रूप में तैयार कर रहे है। आज विद्यालयों में इस प्रकार कि घटनाएं हर जगह सुनने को मिलती है। शहरी अध्यापकों का कहना है कि "हिंसा में अप्रत्याशित उछाल आया है। बच्चें जिन शब्दों का इस्तेमाल करते है, वे हिसंक है। उनके रिश्ते, समूह भी हिसंक है। इसमें दोष उन बच्चों का नहीं बल्कि उनके घर ही हिंसा को बढावा देते है।'' बच्चे अनजाने ही हिंसा की पाठशाला में पलते–बढ़ते जाते है। किसी राष्ट्र का सबसे बडा और बुरा अपकार है उसके बच्चों के मस्तिष्क को हिंसा से प्रदुषित करना। युवा मस्तिष्कों को हिंसा की विचारधाराओं की शिक्षा देते हुए यह काम बहुत सक्रिय तरीके से किया जा रहा है। यही काम समन्वयकारी आदर्शो और सार्वभौमिक मूल्यों को नकार कर निष्क्रिय तरीके से भी किया जा रहा है।

आज हमारे देश में ही नहीं पूरे विश्व में अध्यापक, अभिभावक, नेता, प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी सभी शान्ति संकट जैसी स्थिति से गुजर रहे है, हम चाहते तो है शान्ति शिक्षा को अपनाना परन्तु उसको आत्मसात नहीं कर पा रहे, क्योंकि सभी यह मानते है कि विद्यालयों से ही शान्ति मूल्य आधारित शिक्षा का पाठ पठाया जा सकता है, इसी के द्वारा हम ना केवल राष्ट्र बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय मानवता तथा आपसी बंधुत्व से जुड़ सकते है। तथा हमारी विदेश नीति विश्व शान्ति तथा विश्व बंधुत्व से जुड़ सकती है। हमारी विदेश नीति विश्व शान्ति तथा विश्व बंधुत्व पर आधारित है अतः हमें आज फिर से शिक्षा में शान्ति जैसे मूल्यों का समावेश करके ना केवल अपने देश वरन् सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा तथा शान्ति का अग्रदूत बनना चाहिए। इसके लिए समाचार, पर्यटन, पत्रिका, लेख, टी.वी. आदि लाभकारी हो सकते है तथा तभी हमारा वसुधैव कुटम्बुकम् का सपना साकार हो सकता है।

शान्ति एक ऐसा अमूल्य रत्न है जो कि मनुष्य में अन्तर्निहित है या हम ऐसा कहे कि मनुष्य पंच

Assistant Professor Hindupat Institute of Teacher Training, Raghogarh, Guna (MP), deepakcharkhya11@gmail.com

तत्वों से तो मिलकर बनता है, और छठा तत्त्व शान्ति होता है, जिस प्रकार किसी भी एक तत्त्व के ना होने से जैसे रत्न के ना रहने से मनुष्य की मनुष्यता तथा उसका संसार में सर्वश्रेष्ठ प्राणी होना शंकित हो सकता है।शान्ति शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त विशाल तथा विस्तृत है, इसके अन्तर्गत निशस्त्रीकरणकी शिक्षा, मानवाधिकारों की शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, अहिंसा तथा शोषण से और अन्याय से उत्पन्न विवादों के शान्तिपूर्ण समाधानों के कौशल विकसित करने की शिक्षा है। शान्तिशिक्षा हमारे समाज में उस संस्कृति का निर्माण करती है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति भय और हिंसा से मुक्त होकर अपनी क्षमताओं का भरपूर विकास कर सकते है। चाहे मनुष्य का जीवन या किसी और जीव का उसमें शान्ति परम आवश्यक है।श्री सत्य सांई बाबा का कहना है कि ''जब हम सत्य व सदाचरण का पल्लू पकड़े रहतें है तब हम सर्वोच्च शान्ति अनुभव करते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने त्रि–स्तरीय शान्ति की कामना की थी। ये स्तर है – भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक। आइए वैदिक शान्ति प्रार्थना का पुनस्मरण करे – ऊँ शान्ति, शान्ति, शान्ति।

2.उद्देश्य(Objects):– शोध उद्देश्य निम्न प्रकार से है–

- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत B.Ed. तथा B.Sc.B.Ed.पाठयक्रम के विद्यार्थियों की शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत छात्रों तथा छात्राओं की शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत B.Ed. पाठयक्रम के छात्रों एवं छात्राओं की शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत B.Sc.B.Ed. पाठयक्रम के छात्रों एवं छात्राओं की शान्ति के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3.न्यादर्श (Sample):– प्रस्तुत शोध में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,अजमेर में अध्ययनरत 60 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप चयन किया गया है। 60 विद्यार्थियों में 30 विद्यार्थी B.Ed.पाठ्यक्रम के तथा 30 विद्यार्थी B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम के थे।

4.उपकरण (Tool):– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित 'शान्ति शिक्षा जागरूकता मापनी' का प्रयोग किया गया है। जिसमें 25 प्रश्नों की बहुविकल्पीय प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

5. परिकल्पना(Hypothesis):–शोध परिकल्पनाएं निम्न प्रकार से है–

- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान केB.Ed.तथा B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों व छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान केB.Ed.तथा B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान केB.Ed.पाठ्यक्रम में अध्ययनरतछात्रों व छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान केB.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में अध्ययनरतछात्रों व छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

6. प्रदत्तों का विश्लेषण(Data Analysis):-

6.1 जैन्डर के आधार पर विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

M	30	12.30	4.36	1.41
F	30	13.86	3.51	

सारणी संख्या 6.1 के अनुसारH_0^1क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के B.Ed.तथा B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों व छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है के विश्लेषण में छात्रों का मध्यमान 12.30 तथा प्रमाणिक विचलन 4.96 है और छात्राओं का मध्यमान 13. 86 तथा प्रमाणिक विचलन 3.51 है और प्राप्त टी मान 1.41 है जो सार्थकता स्तर0.5 पर सारणी मान 1. 67 से कम है, जो कि असार्थक है अतः परिकल्पना H_0^1 स्वीकृत की जाती है अर्थात् छात्रों एवं छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6.2 पाठ्यक्रम के आधार पर विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

B.Ed.	30	16.33	2.29	8.5
B.Sc.B.Ed	30	09.83	3.54	

सारणी संख्या 6.2 के अनुसार H_0^2क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के B.Ed.तथा B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है के विश्लेषण में B.Ed.विद्यार्थियों का मध्यमान 16.33 तथा प्रमाणिक विचलन 2.29 और B.Sc.B.Ed. विद्यार्थियों का मध्यमान 9.83 तथा प्रमाणिक विचलन 3.54 है तथा प्राप्त टी मान 8.5 है जो 0.5 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.67 से अत्यधिक अधिक है, जो कि सार्थक है अतः परिकल्पना H_0^2 अस्वीकृत की जाती है अर्थात् B.Ed.तथा B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रतिजागरूकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

4.3 B.Ed. पाठ्यक्रम मेंअध्ययनरत छात्र–छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

M	15	16.73	2.02	1.02
F	15	15.93	2.32	

सारणी संख्या 4.3 के अनुसार H_0^3क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के B.Ed. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों व छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है के विश्लेषण में छात्रों का मध्यमान 16.73 तथा प्रमाणिक विचलन 2.02 और छात्राओं का मध्यमान 15.93 और प्रमाणिक विचलन 2.32 है और प्राप्त टी मान 1.02 है जो 0.5 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.7 से कम है जो कि असार्थक है अतः परिकल्पना H_0^3 स्वीकृत की जाती है अर्थात् छात्र– छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6.4 B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम मेंअध्ययनरत छात्र–छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रतिजागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

M	15	7.86	2.5	3.82
F	15	11.8	3.16	

सारणी संख्या 4.4 के अनुसार H_0^4क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों व छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है के विश्लेषण में छात्रों का मध्यमान 7.86 तथा प्रमाणिक विचलन 2.5 है और छात्राओं का मध्यमान 11.8 और प्रमाणिक विचलन 3.16 है और प्राप्त टी मान 3.82 है जो 0.5 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.7 से अधिक है जो कि सार्थक है अतः परिकल्पना H_0^4अस्वीकृत की जाती है अर्थात् छात्र– छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

7. खोज(Findings):– क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता के अध्ययन करने पर आंकड़ों के विश्लेषण से पाया कि छात्रों एवं छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है। B.Ed.तथा B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है। B.Ed. पाठ्यक्रम के विद्यार्थीB.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की तुलना में शान्ति शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक है। B.Ed.पाठ्यक्रम के छात्रों और छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है। जबकिB.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम के छात्रों और छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता मेंसार्थक अन्तर है। अर्थात् B.Sc.B.Ed.के छात्रों की तुलना में छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता अधिक है।

8. निष्कर्ष एंव सुझाव (Conclusion and Suggestions):– क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि B.Ed.पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति अधिक जागरूकता है और B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में छात्रों की तुलना में छात्राओं में शान्ति शिक्षा के प्रति अधिक जागरूकता है।अतः B.Ed.पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा पर अधिक जोर दिया गया है और NCF-2005के मूल्यों को पाठ्यक्रम में समावेश किया गया है वही B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा पर अधिक जोर नहीं दिया गया है। विशेषकर B.Sc.B.Ed.के छात्र शान्ति शिक्षा के विषय से अनभिज्ञ है। शोध सुझाव के रूप में कहा जा सकता है कि B.Sc.B.Ed.पाठ्यक्रम में शान्ति शिक्षा पर अधिक ध्यान देना चाहिए क्योंकि ये विद्यार्थी ही आगे जाकर विद्यालयों को शान्ति शिक्षा की पौधशाला के रूप में तैयार करेंगे। तथा शान्ति शिक्षा से संबंधित कार्यशाला, रंगमंच कार्यशाला, सांस्कृतिक मूल्यों के व्याख्यान सामाजिकता का विकास करने वाले कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची(Bibliography) :–

- 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा'– 2005
- यूनेस्को (2001), 'लर्निंग द वे ऑफ पीस, ए टीचर्स गाइड टू एजूकेशन फॉर पीस', नई दिल्ली : यूनेस्कोप्रकाशन

- अरोड़ा, रीटा (2004), 'शिक्षा में नवचिन्तन', जयपुर : शिक्षा प्रकाशन
- सुलेमान, मुहम्मद (2006), 'मनोविज्ञान, शिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी', दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन
- Mangal, S.K. (2012), Statistics in Psychology and Education, New Delhi :PHI learning private limited.
- जे श्री (2008) 'मूल्य पर्यावरण और मानव अधिकार की शिक्षा', दिल्ली : शिप्रा प्रकाशन
- हरियन्ना, एम. (1965) 'भारतीय दर्शन की रूपरेखा', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

शहरी एवं ग्रामीण विद्याथियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी कल्याण कुमार

डॉ रेखा गुप्ता

मनुष्य का जन्म समाज में होता है, अतः वह एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के साथ–साथ वह प्राणियों में सबसे बुद्धिमान प्राणी माना गया है। इसी समाज के प्रथम इकाई परिवार से सीखनें की प्रवृति बढ़ने लगती है। क्योंकि मनुष्य में किसी विषय को लेकर सोचने, समझने और चितंन करने की विशिष्ट क्षमता होती है। इसीलिए वह नित्य अपने ज्ञान और अनुभव के प्रकाश में समाज और पर्यावरण के साथ समायोजन में लीन रहता है। मनुष्य के इस समायोजन के कार्य में जो सबसे अधिक उसे प्रभावित की है, वह है शिक्षा। शिक्षा मानव संसाधन के विकास का प्रमुख घटक है। जीवन की गुणवता शिक्षा की दर पर निर्भर करती है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण शिक्षा एवं साक्षरता का स्तर ऊॅचा उठा पाना सम्भव नहीं होता। सबल एवं सुदृढ़ राष्ट्र के लिए जनशक्ति का स्वस्थ्य होना आवश्यक है। स्वस्थ्य जनसंख्या ही राष्ट्र को प्रत्येक दृष्टि से उन्नत बना सकती है। शिक्षा व्यक्ति की सोच एवं समझ में परिवर्तन लाने का एक सशक्त माध्यम है। अतः जनसंख्या नियंत्रण के लिए प्रयत्न करने वाले लगभग सभी क्षेत्र के विचारकों ने जनसंख्या शिक्षा को इस निमित्त उपयोगी माना और उसकी महत्ता स्वीकार की है। इसीलिए प्रत्येक क्षेत्र के विचारकों ने जनसंख्या शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने पर बल दिया। इसका मुख्य कारण यह माना गया है कि जनसंख्या शिक्षा द्वारा उस वर्ग की मनोवृति एवं सोच बदलने में सहायता मिलेगी।

प्रस्तावनाः–

जनसंख्या शिक्षा में परिवार के आकार, शिशु की देखभाल, जनसंख्या के दुष्प्रभाव आदि की जानकारी प्रदान की जाती है। इसलिए जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से युवकों एवं बालकों में जनसंख्या के सम्बन्ध में स्वस्थ्य दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है। उनमें एक अच्छे माता–पिता बनने के गुण विकसित किया जा सकते है। इस प्रकार जनसंख्या शिक्षा का महत्व इस बात में भी निहित है कि यह बालकों एवं युवावर्ग जो भविष्य में जनसंख्या वृद्धि दर को निर्धारित करेंगे को छोटे परिवार जनसंख्या नियंत्रण गुणवत्ता युक्त जीवन,स्वस्थ्य एवं सुखी जीवन, सुखी उन्नत राष्ट्र, स्वस्थ्य पर्यावरण आदि के सम्बन्ध में जानकारी देकर जनसंख्या के सम्बन्ध में उचित दृष्टिकोण विकसित कर सकती है।

मूलतः लघु परिवार में रहने वाले प्रत्येक सदस्य पर सूक्ष्म अध्ययन करने हेतू समय पर्याप्त रूप से उपलब्ध रहता इस कारण सदस्य को उचित देखभाल कर राष्ट्र निर्माण में प्रमुख भागीदारी निभा सकते है।

वीडरमैन के शब्दों में–''जनसंख्या–शिक्षा को एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके द्वारा छात्रों को जनसंख्या प्रक्रिया के अर्थ एवं प्रकृति, जनसंख्या की विशेषताओं, जनसंख्या परिवर्तन क कारणों एवं इसके परिणामों एवं इन परिवर्तनों को परिवार,समाज,देश तथा विश्व पर पड़ने वाले प्रभावों से अवगत कराया जाता है।

प्राचार्य- बी .एड आईसेक्ट विश्वविद्यालय रायसेन म.प्र भारत rekha.gupta@gmail.com

मैसिएलास के अनुसार– ''जनसंख्या–शिक्षा ऐसे विश्वसनीय ज्ञान की विधियों का शिक्षण अथवा सीखना है, जो जनसंख्या के स्वरूप तथा जनसंख्या परिवर्तन के मानवीय एवं प्राकृतिक परिणामों की खोज करती हैं।''जनसंख्या–शिक्षा द्वारा कोई देश अपनी शिक्षा व्यवस्था में ऐसी योजनायें बनाता है जिससे जनसंख्या सम्बन्धी स्थितियों का छात्रों को सही ज्ञान हो सके।कुछ विचारकों ने इसे इस प्रकार परिभाषित किया है।

उद्देश्य.

निवास स्थान (शहरी व ग्रामीण) के आधर पर शिक्षा स्नातक विद्यार्थियों की जनसंख्या शिक्षा एवं लघु परिवार के प्रति दृष्टिकोण का **तुलनात्मक** अध्ययन।

परिकल्पना

जनसंख्या शिक्षा एवं लघु परिवार के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
निवास स्थान (शहरी/ग्रामीण) के आधार पर शिक्षास्नातक स्तरीय विद्यार्थियों की जनसंख्या शिक्षा एवं लघु परिवार के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं

शोध क्षेत्रों का चयन–

सर्वप्रथम ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की सूची तैयार की गयी। इस सूची में ग्रामीण स्तर के शिक्षास्नातक**(बेचलर ऑफ एजुकेशन)** स्तर के विद्यार्थी एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षास्नातक**(बेचलर ऑफ एजुकेशन)** स्तर के विद्यार्थियों का चयन गढ़वा जिला, गॉव जिला से यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। जो गोपीनाथ सिंह बी0एड0 कॉलेज लातदाग,मेराल,गढ़वा राज्य–झारखण्ड और इंदिरा सिंह बी0एड कॉलेज जिला–गढ़वा झारखण्ड के विद्यार्थीयों को चयन किया गया है

Methodology:-

शोधकर्ता द्वारा सभी उपकरणें के समुचित उपयोग हेतु न्यादर्श का क्रमशः एक–एक करके परीक्षण दिये गये। इसके पश्चात् प्रथम पृष्ठ पर लिखे गये समस्त निर्देशों को पढ़कर उदाहरणों की सहायता से समझाया। इसके पश्चात् दृष्टिकोण मापनी पर अंकित प्रश्नों के उत्तर उसी पर मुद्रित उत्तर प्रत्रक पर देने को कहा। सभी न्यादर्शो द्वारा परीक्षण को पूर्ण कर लेने पर उनसे उत्तर पत्रक वापस ले लिये गये। शोधकर्ता द्वारा प्रथम निरीक्षण मे देखा गया कि सम्पूर्ण न्यादर्श ने सभी प्रश्नों के उत्तर दिये हैं।

इन सभी प्रश्नों को प्रशासित करते समय मुख्य रूप से प्रयोज्यों को बता दिया गया कि ये परीक्षण शोधकार्य के लिए आपके विचार मात्र हैं। इसे किसी दूसरे को नहीं बताया जायेगा, बल्कि गोपनीय रखा जायेगा। अतः आप स्वतन्त्रता पूर्वक स्वयं के विचारों के अनुसार प्रश्नों के उत्तर हैं।

परीक्षण का फलांकन व सारणीयन

दृष्टिकोण मापनी के फलांकन हेतु मैनुअल की मदद ली गयी। इसके साथ ही दृष्टिकोण मापनी के समायोजन व स्पष्ट फलांकन करने के लिए प्राप्तांक कुंजी की सहायता भी ली गयी। तत्पश्चात् प्राप्त प्राप्तों कों को सरणीबद्ध किया गया जिन्हें सारणी के रूप में विश्लेषित किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

अनुसंधान प्रक्रिया में परिकल्पनाओं की रचना के उपरान्त उनके परीक्षण के लिए संकलित किये गये आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने की आवश्यकता होती है जिनकी सहायता से हम अपने वांछित लक्ष्य की प्राप्ति कर सकें। प्रदत्तों के विश्लेषण से अभिप्राय उनमें निहित तथ्यों को निर्धारित करने हेतु सारणीबद्ध विषय सामग्री का अध्ययन करना होता है जो अग्रलिखित तालिकाओं में किया गया है।

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्याथियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका–01

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	ज
शहरी	50	10.74	4.76	1.023
ग्रामीण	50	9.52	6.96	

तलिका–1 से विदित होता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का मध्यमान क्रमशः 10.74 एवं 9.52 तथा मानक विचलन क्रमशः 4.76 एवं 6.96 पाया गया मध्यमान से स्पष्ट होता है कि शहीर विद्यार्थियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा विद्यार्थियों अधिक सकारात्मक थी। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की दृष्टिकोण शहरी विद्यार्थियों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।अतः ून्य परिकल्पना स्वीकार की शहरी विद्यार्थियों मै ।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा किसी भी व्यक्ति के जीवन को सुखमय बनाने का साधन है। जनसंख्या वृद्धि के आंकडों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि परिवार को सीमित रखने की प्रवृत्ति का विकास करना आज के समय की सबसे बड़ी प्राथमिकता है। जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण पाना है तो बच्चों को प्रारम्भ से ही जनसंख्या शिक्षा दी जानी चाहिए। जनसंख्या शिक्षा देने से उनमें लघु परिवार के प्रति ऐसी भावनाओं का जन्म होगा जो सीमित परिवार रखने में बडी ही सहायता सिद्ध होगी। बच्चों व युवाओं के भावी जीवन के लिए जनसंख्या शिक्षा एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेगी। प्रस्तुत अध्ययन में तीव्र जनसंख्या वृद्धि व उसके लिए जनसंख्या शिक्षा की उपयोगिता को चयनित लगभग समस्त छात्रों ने सर्वमत से स्वीकार किया है। जनसंख्या शिक्षा के द्वारा ही जनसाधारण में व्याप्त अंधविश्वासों को दूर किया जा सकता है। इसके द्वारा ही वे समझ पाते हैं कि संतान का होना कोई दैवीय घटना नहीं है वरन् उस पर रोक लगायी जा सकती है। इस प्रकार से लघु परिवार की भावना का विकास होगा। जनसंख्या शिक्षा से ही व्यक्ति यह समझ पाता है कि अधिक बच्चों की समस्याये भी अधिक होती है। अतः परिवार को सीमित रखना आवश्यक है। आज की विषम परिस्थितियों को देखते हुये जनसंख्या शिक्षा एवं लघु परिवार का महत्व स्वयं सिद्ध है। अतः इन सबको देखते हुये जनसंख्या शिक्षा एवं तत्व संबंधी मनोभावनाओं में परिवर्तन हेतु इसे शिक्षा में जोड़ा जाने व इन्हें समझाने के लिए विभिन्न माध्यमों व कार्यक्रमों का आश्रय लिया जाये।

सुझाव

प्रस्तुत विषय में और अधिक अध्ययन करने की आवश्यकता है क्योंकि समयाभाव के कारण प्रस्तुत रूप नहीं प्रदान किया जा सका है। वर्तमान परिस्थितियों में जनसंख्या शिक्षा की महत्ता एवं लघु परिवार की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि जनसंख्या शिक्षा एवं लघु परिवार के क्षेत्र में और अधिक गहन अध्ययन किया जाये, जिसके लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं–

1. प्रस्तुत शोध कार्य में 100 प्रतिदर्श पर सम्पादित किया गया परंतु आगे अनुसंधानकर्ता विस्तृत रूप से विद्यार्थियोंको अपने शोधकार्य का विषय बना सकता है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य केवल गढ़वा जिला के विद्यार्थियों पर ही सम्पादित किया गया परन्तु आगे विसतृत क्षेत्र को लेकर अपना शोध कार्य सम्पन्न कर सकता है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में केवल शिक्षास्नातक विद्यार्थियों के आधार पर अध्ययन किया शहरी एवं ग्रामीण तथा पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया। भविष्य में जाति, आय व व्यवसाय इत्यादि के आधार पर अपने शोध कार्य को आगे बढ़ा सकता है।
4. प्रस्तुत अध्ययन केवल शिक्षास्नातक स्तरीय विद्यार्थियों पर किया गया है, परन्तु भविष्य में अध्ययनकर्ता पी0एच0डी0 अथवा एम0फिल छात्रों को लेकर अध्ययन कर सकता है।
5. प्रस्तुत समस्या का अध्ययन सामाजिक स्थिति एवं धार्मिक परिपेक्ष्य के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत अध्यय केवल शिक्षास्नातक विद्यार्थियों को लेकर किया गया है परन्तु भविष्य में अध्ययनकर्ता शिक्षकों, शिक्षकाओं आदि को लेकर अध्ययन कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहूजा, राम (2002): समाजिक समस्यायें, नई दिल्ली एवं जयपुरा रावत पब्लिकेशन्स, पृष्ठ–33–42.
2. श्रीवास्तव, एस0पी0 (2005): जनांकिकीय अध्ययन के प्रारूप , मुम्बई, हिमालय पब्लिसिंग, पृष्ठ–70–76
3. सिंह,भोपाल (1999): जनसंख्या शिक्षा परिचय, नई दिल्ली, करोलबाग,आर्य कुक डिपो पृष्ठ–135–142
4. श्रीवास्तव, महेन्द्र कुमार(2007): जनसंख्या वृद्धि के विभिन्न पहलु, कुरूक्षेत्र, जुलाई, पृष्ठ–12–17
5. यादव, दयाशंकर सिंह(2007): जनसंख्या वृद्धि एवं रोजगार, प्रौढ़ शिक्षा, जुलाई, पृष्ठ–4–7
6. मलिक, जे0 एस0 (2008): जनसंख्या वृद्धि एवं रोजगार, प्रौढ़ शिक्षा, जुलाई, पृष्ठ–21–26
7. दुष्कर, महेश (1986): ''जनसंख्या शिक्षा के बारे में बुन्देलखण्ड़ क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के ज्ञान, अभिरूचि व महत्व का अध्ययन। 'इन्डियन एजूकेशनल रिव्यू' वाल्यूम 29(1.2) 77–79
8. श्रीवास्तव, प्रवीन कुमार (1997): ''इलाहाबाद जनपद के श्रमिक वर्ग में परिवार नियोजन कार्यक्रम की स्वीकार्यता का अध्ययन'' पी0एच0डी0 एम0जे0पी0 आर0य0 इलाहाबाद पृष्ठ–35–55

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

Changing Business Environment

Dr. Kamal Jain[1] Dr. Vaisahali Tiwari[2]

Abstract

India is ranked 132nd out of 185 economics in Doing Business 2013, with no change in overall ranking from, last year. According to the latest Enterprise Surveys 2006, Electricity, Tax Rates and Corruption represent the top 3 obstacles to running a business in india. India's restriction on foreign equity ownership are greater than the average of the countries covered by the investing across Sectors indicators in the south Asia region and of the BRIC (Brazil, Russian, Federation India, and china) counties. Indian imposes restriction on foreign equity ownership in many sectors, and in particular in the service industries. Sectors such as railways freight transportation and forestry are dominated by public monopolies and are closed to foreign ownership in the agriculture sectors is also not allowed.

Introduction

India economics freedom score is 54.6, making its economy the 123rd freest in the 2012 index, its score is unchanged from last year, with an improvement in labor freedom, offset by declining score in five other areas including business freedom from corruption government spending and monetary freedom India is ranked 25th out of 41 countries in the Asia pacific region and its overall score is below the world.

India has recently seen much activities happening in the domain of Business, Passing of the new Companies bill in parliament which have some major improvements over companies bill 1956, allowance of FDI, formation and wider spread of SEZ, formation and upgradation of new trade ports amongst other had and will continue to have a greater impact on the way business was conducted in India. new rules for conduct of business has been formed concern for people now have a greater role to play (CSR)

widespread changes in technology and penetration of digital media in india has resulted in customers which are more informative and aware than ever. Both business and trade have gained under the wave of information technology with improvement in efficiency, productivity and bottom line. Falling trade barriers with the emergence of china and other developing countries as significant trading partners is a key feature of the changing economics environment . New business models has been developed , for example online retails and E commerce has emerged as most promising sector the last decade has shown rapid development in the information technology and its application productivity improvement has facilitated and accurate production in large volumes.

Most importantly, with the automation taking place, Indian financial sector has also

Pro. Govt. P.G. College Khargone, shubh.shree28@gmail.com
Gust Faculty Commerce, Govt. P.G. College Khargone, shubh.shree28@gmail.com

benefited in a big way. Advent of internet banking, reach of credit/debit cards.

Types of environment

On the basis of the extent intimacy with the firm the environmental factor may be classified in to different types of levels.

1. **Internal environment –** are the factors internal to the firm. The internal Factors are generally regarded as controllable factors because the company has control over these factors; it can alter are modify such factors as its personal physical facilities organization and functional means such as marketing mix to suit the environment.
2. **External Environment** - are the factors internal to the firm which have relevance to it The external factors, on the other hand , are by and large, beyond the control of a company the external or environmental factors such as the economics Factors sociocultural factors government and legal factors demographic factors geo-physical etc are there for generally regarded as uncontrollable factors

POLITICAL

Environment includes factors like a country 's political system , types of government, central state relation , public opinion, law & order Nature of government policies to wards business particular those related to taxation, industrial , regulation of business & industry and foreign trade regulation . Corruption significantly impacts india's business environment and poses a threat to sustained economic growth.

1. Pervasive corruption reduces competition and efficiency in the indian economics india ranked 134^{th} out of 183 countries in the words banks ease of doing business index in 2011, a ranking lower than both china (79^{th}) and Brazil(127^{th}) Businesses face constraints in starting a business dealing with construction permits and enforcing contracts .
2. Corruption raises the cost of doing business and adds to the problem of regulatory uncertainty , thus affecting foreign direct investment FDI Due to Strict foreign investment regulations , FDI inflows to india remain low compared to its peer economics and stood at US24.6 billion in 2010, compared to US106 Billon for china and US41.2 Billion for Russian.
3. Significant tax revenues have been lost due to corruption the sale of the 2G spectrum telecom licenses in 2008 alone caused an estimated US40.0 Billon revenue loss for the indian government india has faced a rising budget deficit which stood at Rs 7.0 trillion (US153 billion) in 2010 or 8.9% of total GDP.

ECONOMICAL

Economics factors relate to the general condition of the economy within which a business operates it comprises of the factors and forces concerned with means of production and distribution of wealth . it refers to the nature of economics system .economic politics of

the country organization of capital markets ,GDP income level growth rate ,inflation rate, interest rates, money supply , and unemployment rate, the indian economic is currently the 9th largest in the world by nominal GDP and the 4th largest by purchasing power party (PPP).

SOCIO-CULTURAL ENVIRONMENT

It cover factors such as social customer tradition , culture, lifestyle, attitude of people saving and spending patterns size of population , demographic profile , education level, occupation structure, trade unions , and other factors that influence and describe the behavioral characteristics typical of the people . it would also include the corporate Social Responsibility initiatives undertaken by companies.

TECHNOLOGICAL DIMENSION

New technology technical obsolescence occurs when a new product or technology supersedes the old, and it become preferred to utilize the new technology in place of the old, Some Example of technological obsolescence are telephone replacing the telegraph, and DVD replacing VCR . Product are becoming obsolete and getting replaced by newer versions . Not many people will remember the days of floppy disk Computer are becoming smaller but faster , and TVs are becoming sleeker with more features.

LEGAL OR REGULATORY DIMENSION

It describes the framework of legislation impacting business. it includes all the laws legal system and judicial system of the country. A business has to work within the framework of a country ‘s laws and regulations . Laws important to business relate to areas like monopolies & restrictive trade, consumer protection , employment , industrial relations, health & safety , and joint stock companies.

Airlines are an important part of the economy. Apart from contributing to the national exchequer and providing significant employment opportunities, many industry sectors like tourism and hospitality also benefit from the wellbeing and growth of the airline industry.

Manufacturing The availability of power to industry continues to be woefully short in most indian state. Non Availability of raw materials is leading to black market. in the pharmaceutical sector most of the basis bulk drugs come from china , which sometimes leads to stock out situations . The Govt. needs to give some thought to developing this aspect. so as to be independent for our received for our requirement of bulk drugs .Erratic & whimsical interpretation of drug and Excise rules by FDA and excise staff respectively. Every month new notification are received for one thing or the other . Also , huge amount of manufacturing data is to be provided to govt. every year probably no one in any of the govt. depts. ever looks at if they need something, they ask for fresh data all the time .

Finance-

Although availability of finance has become easier , costs of funds have gone up. intense competition has led to increase of credit limits and credit days as well as discount reducing margins drastically. labour costs have now become significant as a percentage of total cost of production.

Human Resource- Archaic labour laws continue to dominate. these is very little improvement in productivity of the indian worker companies face constant threats from trade unions . there is political interface and an acute shortage of trained skilled labour the management of business respond to environmental forces in different ways depending upon their goals , values , belief and competence.

References

1. http://blog.euromonitor.com/2011/09/ corruption –impacts indian dusiness-and-political-encironment.html#sthash.Vb39DA3v.dpuf.
2. http://www.kornferryinstitute.com/sites/all/files/docements/brifings-magazine-download/Glogalisation,%20and%20the%20 Leadership%20 Lmperative%20.pdf
3. http://rru.worldbank.org/BESnapshots/india/default.aspx.

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

Life Skill Education and Homework of Middle Class Student

Dr. Manju Parashar

Abstract

Life skills are abilities for adoptive and positive behavior that enable individuals to deal effectively with the demands and challenges of everyday life. A life skills educational programme needs to be incorporated in to schools in the interest of the children's mental well-being. Life Skill education is a dynamic process it cannot be learned or enhanced on the basis of information or discussion also. Homework is a valuable tool in the learning process it is a natural extension of class work created and designed by the teacher. Research tells us that doing Homework not only increases a student learning but also helps them important life skills such as organization, problem solving, gool setting and preseverance.

Introduction:

In the current scenario of increased urbanization and rampant globalization, the children hitherto are a confused lot. There is a lot of stress on achievement and performance from the teachers and parents. Children are pushed to do much more than customary to get the desired acceptance and acknowledgment from the Family and Society circle.

A life skill Educational Programme needs to be incorporated in to schools in the interest of the children's mental well-being. A competent life skill programme should be concerned not only with the prevention of emotional and Psychosocial problems but should also be fourssed at management and enhancing Pro-Social behaviour.

Life skill education is a very important and integral part of educational system worldwide. In Indian schools however life skills education is yet to be fully initiated and recognized as an integral part of the curriculum. In most schools, value education in confused with life skill education.

The CBSC Board asserts that life skills education has been introduced in class 6^{th} in 2003-4 in class 7^{th} in 2004-5 and subsequently in class 8^{th}, 9^{th} and 10^{th}. The CBSC has presently introduced (in 2012) life skill training programme as part of continuous and comprehensive evaluation targeted at the adolescent students between 10-18 years of age. Surva shiksha abhiyaan (SSA) has under its agenda life skill training for the upper primary girls along with providing quality elementary education.

Homework important part of instruction homework provides students the opportunity to practices or extend the material learned in the classroom. Homework can have a positive

Principal, Sri Balaji Teacher's Training College Benad Road, Jaipur, Email-sumit.manju@gmail.com

impact on student learning it also be a source of frustration for bath parents and children.

The basic objective of assigning homework to students are the same as schooling in general. To increase the knowledge and improve the abilities and skills of the student.

Homework may be deigned to reinforce with students have already learned, prepare then for upcoming lessons, extend what they know by having them apply it to new situations or it integrate their abilities by applying many skills to a single task.

Objectives of study

1. To study the need of Homework of middle class students.
2. To study the importance of Home-work of middle class students.
3. To study the effect of Home-work of middle class students.

Hypothesis of the study

1. There is no difference between girls and boys of middle class studying in government chool regarding the need of Homework.
2. There is no difference between girls and boys of Middle class studying in private school regarding the need of Homework.
3. There is no difference between girls and boys of middle class studying in government school regarding the importance of Homework.
4. There is no difference between girls and boys of middle class studying in private school regarding the importance of Homework.
5. There is no difference between girls and boys of middle class studying in government school regarding the effect of Homework.
6. There is no difference between girls and boys of middle class studying in private school regarding the effect of Homework.

Sample:-

The total sample used for the study is:-

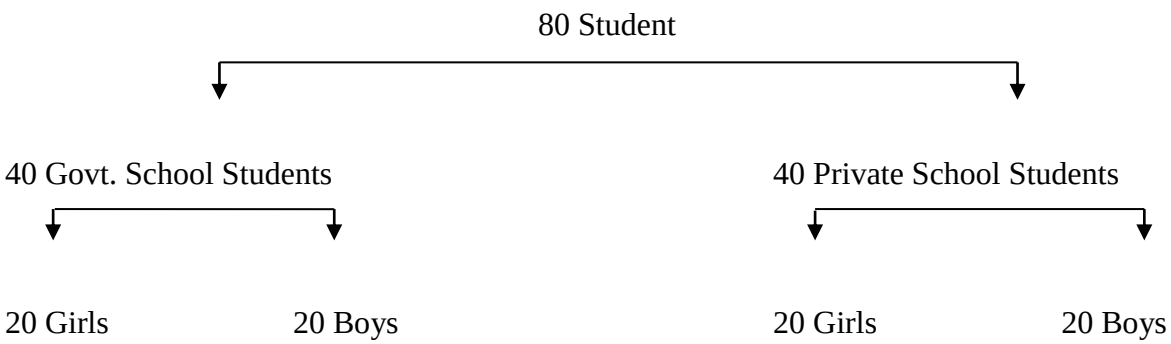

Method:- in present study survey method was employed

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

Tool:-

Self made Questionnaire is used.

Statistical Techniques Used:- Mean, S.D., t-test

Data Analysis & Funding

Hypothesis-1:- There is no difference between girls and boys of middle class studying in government school regarding the need of Homework.

Table-1

	Groups	Mean	S.D.	T-Test	Result
Govt. School	Girls	14.8	1.7492	2.5951	At 0.05 level rejected
	Boys	13.15	2.2422		At 0.01 level accepted

Df=38 ‘t’ value at 0.05 level - 2.05

0.01 level - 2.71

On looking at table reading the scores of need of Homework between girls and boys of middle class standard studying in government school, the mean related to girls and boys are 14.8 and 13.15 respectively and S.D. are 1.7492 and 2.2422 respectively. From this data “t” value 2.5951 is obtained. This calculated value is more than table value at 0.05 level which is 2.05 and less than table value at 0.01 which is 2.71. it means the value of “t” at 0.05 level is significant and at 0.01 level is not significant. So null hypothesis is rejected at 0.05 level and it is to be assumed that there is difference between girls and boys of sixth standard studying in government school regarding the need of homework.

Hypothesis-2:- There is no difference between girls and boys of middle class studying in private school regarding the need of Homework.

Table-2

	Groups	Mean	S.D.	T-Test	Result
Govt. School	Girls	13.9	2.4677	1.8582	accepted
	Boys	12.95	2.5337		

On looking at table no-2 regarding the scores of need of homework between girls and boys of middle class studying in private school, the mean related to girls and boy are 13.9 and 12.95 respectively and S.D. are 2.4677 and 2.5337 respectively. From this data “t” value 1.8582 is obtained. This calculated value is less than table value at 0.05 level which is 2.05

and at 0.01 So null hypothesis is no difference between girls and boys of middle class studying in private school regarding the need of homework is accepted.

This is so that there is no difference between girls and boys of middle class standard in private school regarding the need of homework

Hypothesis-3:- There is no difference between girls and boys of middle class studying in government school regarding the importance of Homework.

Table-3

	Groups	**Mean**	**S.D.**	**T-Value**	**Result**
Govt. School	**Boys**	**20.6**	**2.5298**	**0.4647**	**accepted**
	Girls	20.25	2.224		

On looking at table No-3 regarding the scores of importance of Homework between girls and boys of sixth standard studying in government school, the mean related to girls and boys are 20.6 are 20.25 respectively and S.D. are 2.5298 and 2.224 respectively. From this data "t" value 0.4647 is obtained. This calculated value is less than table value at 0.05 level and at 0.01 So null hypothesis is accepted.

This is so that there is no difference between girls and boys of middle class studying in government school regarding the importance of homework.

Hypotesis-4:- There is no difference between girls and boys of middle class studying in private school regarding the importance of Homework.

Table-4

	Groups	**Mean**	**S.D.**	**T-Value**	**Result**
Private School	Boys	21.6	2.4494	.2248	accepted
	Girls	21.3	.2248		

On looking at table No.-4 regarding the scores of importance of homework between girls and boys of middle class studying in private school, the mean related to girls and boys are 21.45 and 21.3 respectively and S.D. are 2.4494 and 1.7029 respectively. From this data "t" value 0.2248 is obtained. This calculated value is less than table value at 0.05 level and 0.01. So null hypothesis is accepted.

This is so that is no difference between girls and boys of middle class studying in private school regarding the importance of homework.

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

Hypothesis-5:- There is no difference between girls and boys of middle class studying in government school regarding the effect of homework.

Table-5

	Groups	Mean	S.D.	T-Value	Result
Private School	Girls	30.1	4.9789	1.4050	accepted
	Boys	27.95	4.695		

On looking at table no. 6 regarding the scores of effect of homework between girls and boys of middle class studying in government school, the mean related to girls and boy are 30.1 and 27.95 respectively and S.D. are 4.9789 and 4.695 respectively. From this data "t" value 1.4050 is obtained. This calculated value is less than table at 0.05 level and at 0.01. So null hypothesis is accepted.

This is so that there is no difference between girls and boys of middle class studying in government school regarding the effect of homework.

Hypothesis-6:- There is no difference between girls and boys of middle class studying in private school regarding the effect of Homework.

Table-6

	Groups	Mean	S.D.	T-Value	Result
Private School	Girls	30.1	3.7802	1.1618	accepted
	Boys	28.45	5.1035		

On looking at table no. 6 regarding the scores of effect of Homework between girls and boys of middle class studying in private school, the mean related to girls and boys are 30.1 and 28.45 respectively and S.D. are 3.7802 and 5.1035 respectively. From this data "t" value 1.1618 is obtained. This calculated value is less than table value at 0.05 level and at 0.01. so null hypothesis is accepted.

This is so that there is no difference between girls and boys of middle class studying in private school regarding the effect of homework.

Educational Suggestions:-

The homework tips presented are targeted at the three key people who are most directly involved, the teacher, the kids and the parents who must deal with them at home. As teachers, we all know that homework is good for kids for a variety of reasons that don't need to be enumerated here.

Although parents recognize the long-term benefits of homework, they aren't any happier about the daily struggle to get it done. In the homework wars ("Sit down and do your homework now!" "Stop nagging me!"), parents often times must shoulder the responsibility of making sure that it get done regularly and on time.

And the kids?

We All know how they feel about homework

They hate it. We all know that. But we all know that it's essential to their academic success.

So, here are some tips for teachers, parents and students

1. Homework Tips for Teachers:

a.) Give the right amount of homework.

- Don't overload kids with homework
- Keep parents informed.
- Vary the kinds of homework
- Be careful about parent involvement.
- Never give homework as punishment.

b.) Homework Tips for Parents:

- Be a stage manager.
- Be a motivator.
- Be a role model.
- Be a monitor.
- Be a mentor.

c.) Homework Tips for Students:

- Pick a good time to do homework.
- Find a place that makes studying easy.
- Spend more time on hard homework than easy homework. If homework gets too hard, ask for help. Remember to make time for long-term projects.

References:-

- http://en.wikipedia.org/wiki/Homework
- http://www.nasponline.org/resources/home_school/homework.asppx
- http://blog.eskool.ca/parenting/why-is-homework-important
- http://www.studentpulse.com/articles/99/the-value-of-homework-is homework-an-important-tool-learning-in-the-classroom
- http://www.ask.com/question/why-is -it-important-to-do-homework
- http://forums.govteen.com/creative-writing/194615-importance-homework-short-writing.html

- https://ed.standford.edu/in-the-media/what039s-right-amount homework
- http://momrecommends.about.com.od/parentingbehaveioudiscipline/a/The-Dos-And-Do-Not-Of-Homework.htm
- http://www.dailyteachingtools.com/homework-tips.html
- http://www.asksource.info/pdf/31181_lifeskillsed_1994.pdf
- http://changingminds.org/articles/articles/life_skills_education.htm
- School as community vs school as factory, by Gary.E.Martin and Angus MacNell in connexions
- http://www.teacherplus.org/2010/february-2010/life-skills-education-in-our-school
- http://www.indiaeducationreview.com/news/rebuild-skills-teachers-depoliticize-education-vice-president

*****

ISSN NO: 2454-5643
NIMAR EDUCATIONAL REVIEW INTERNATIONAL
VOLUME - 04 ISSUE – 4 Jan-Jun 2017

STUDENTS & DEMOCRACY

Dr. KANCHAN JIGYASI

Last year, during parliament election 2014 our worthy PRIME MINISTER , the most favourite of youngsters, Mr.Narendra Modi used to say that our country is the youngest country among all countries because 66% are debut voters.

Mr.Arvind Kejriwal, founder member of AAM ADMI PARTY also attracted youngsters towards politics.

In the present scenario, it is required that students should learn to exhibit a disciplined and mature behavior not only confined to **before but also during & after the ELECTIONS.** The high school and higher secondary students are pre-voters. They are going to take active participation in election procedure in near future . Thus they will play a significant role in election procedure. Studies reveal that the election system is the pillar of the Indian democracy. As the system consist of various levels of election, **the union, the state & the local levels,** the voter requires critical listening and analyzing the information in the debates and speeches given by each candidate . The electoral powers and the candidate campaign can provide valuable learning opportunities for involvement of students in election procedure in near future. Students will come to know about the overlapping values and interests of each candidate and they will identify the issues that require the voters' decision. When they will attain the knowledge for election procedure ,they will use it wisely and correctly for their right to vote. Awareness for election procedure prepares the pre-voters to participate in consciously reproducing their society and conscious reproduction is not only the matter of democratic education but also of democratic politics. Students' awareness for election procedure is one of the major tasks that education must perform in a democratic society. According to a well known thinker KELLY, election is the proper preparation of young citizens for the role and responsibilities they must be ready to take on when they reach maturity. Election Commission of India – Chief Electoral Officer also conducted base line

Reader I/c Director,Department of Multimedia Education M.P. Bhoj (Open) University Bhopal,

survey of **K**nowledge, **A**ttitude, **B**ehavior, **B**elief and **P**ractices- (**KABBP**) of electors. So the cultivation of virtues, knowledge and skills necessary for political participation has moral priority over other purposes of the public education in a democratic country.

In India the trend, of students' actively participating in politics and election procedure, began in the early 20th century when India was struggling for its freedom. Political parties at that time started analyzing and listing the support of the young students who organized themselves happily, to help one party or the other. When India was not independent, the young blood was expected to contribute to the independence movement. Mahatma Gandhi called upon the youth to participate actively in election procedure and in politics as well, but once the independence was achieved, the Indian society entered into a debate over the participation of students in the election procedure.

The political climate decides the political education. At present, political parties are engaged in analyzing and listing support of students in India. This obviously results in the students getting sharply divided as if they were of this political party or that,Even the campus elections become tanned with the touch of politics. Students of 11Th class cannot take actual and active participation in election procedure but they can experience the election procedure in school elections during the election process students should actively participate in election procedure, so that they can know about the guidelines for elections, the rules & regulations and codes of conduct for the various stages of election. Students become familiar with the does and don'ts regarding election procedure. Being the future voters they come to know about the right practices regarding elections.

Actually, knowledge or understanding of a subject, issue or situation is awareness.

To be conscious about events, objects or sensory patterns is awareness.

In our country majority of population is below 40 years of age, who are electing a majority of people above 60 years of age to govern. At the retirement age our political leaders are called to be experts, while people below 56 years of age are considered as political kids (**pappu).**

There are **pros and cons** of students participation in politics and election procedure. In Indian politics it is also noticeable that for a young leader with no political family, it's impossible to create spark for politics. That is also a reason that the youth today are not interested in participating in the political affairs. The second reason seems to be their inexperience for election procedure. This also explains that young people are not given opportunities, to prove themselves. While youth can contribute in many more ways than just contesting elections. Present time acknowledges the need of youth contribution in the area like educating people regarding awareness about election procedure as well as about social ills.

AT LAST I WANT TO SAY THAT FOR CREATING A HEALTHY ATMOSPHERE IN POLITICS IT IS NECESSARY THAT A CONTESTENT SHOULD BE CHARACTERFUL, HONEST & SHOULD BE DEVOTED TO NATION ; INSTEAD OF ONLY OPPOSING THE GOVT. EVEN IN GOOD DEEDS. TO CLEAN THE COUNTRY AS WELL AS POLICTICAL EVILS YOUTH OF OUR COUNTRY HAVE TO TAKE AN INITIATIVE.

*****